शिवसहस्रनाम

नामावली सहित



पूजा प्रकाशन दिल्ली-6



श्री शिव सहस्रनाम स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद सहित)

शंकर भगवान के १००० नाम,

आरती व नामावली सहित्

सम्पादक :-

अतुल कुमार

मूल्य 18. .00 रु०

प्रकाशक :-

पूजा प्रकाशन

(सदर स्टेशन के बराबर में)

पुल कुतब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110 006

फोन :- { दुकान : ☎ 3625241, 3626450

प्रकाशक :-

पूजा प्रकाशन

पुल कुतब रोड़, (सदर स्टेशन के बराबर में)
सदर बाजार, दिल्ली-110 006

प्रमुख विक्रेता: **गर्ग कम्पनी बुकसेलर**
पुल कुतब रोड़, सदर बाजार,
दिल्ली-6

संस्करण

लेजर टाईप सेटिंग :- **एस.एस. ग्राफिक्स**
9319, टोकरी वालान,
आजाद मार्किट, दिल्ली-6
फोन :- 7772517

मुद्रक :- **फेमस ऑफसेट**
फराशखाना, दिल्ली-110 006

भगवान विष्णु द्वारा किए गये शिव सहस्रनाम के पाठ की कथा

एक समय की बात है, दैत्य अत्यन्त प्रबल होकर लोगों को पीड़ा देने और धर्म का लोप करने लगे। उन महाबली और पराक्रमी दैत्यों से पीड़ित हो देवताओं ने देवरक्षक भगवान विष्णु से अपना सारा दुःख कहा। तब श्रीहरि कैलाश पर जाकर भगवान् शिव की विधिपूर्वक आराधना करने लगे। वे हजार नामों से शिव की स्तुति करते तथा प्रत्येक नाम पर एक कमल चढ़ाते थे। तब भगवान् शंकर ने विष्णु के भक्तिभाव की परीक्षा करने के लिये उनके लाये हुए एक हजार कमलों में से एक को छिपा दिया। शिव की माया के कारण घटित हुई इस अद्भुत घटना का भगवान् विष्णु को पता नहीं लगा। उन्होंने एक फूल कम जानकर उसकी खोज आरम्भ की। दृढ़तापूर्वक उत्तम व्रत का पालन करने वाले श्रीहरि ने भगवान् शिव की प्रसन्नता के लिये उस एक फूल की प्राप्ति के उद्देश्य से सारी पृथ्वी पर भ्रमण किया। परंतु कहीं भी उन्हें वह फूल नहीं मिला। तब विशुद्धचेता विष्णु ने एक फूल की पूर्ति के लिये अपने कमलसदृश एक नेत्र को ही निकालकर चढ़ा दिया। यह देख सबका दुःख दूर करने वाले भगवान शंकर बड़े प्रसन्न हुए और वहीं उनके सामने प्रकट हो गये। प्रकट होकर श्रीहरि से बोले-'हरे! मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम इच्छानुसार वर माँगो। मैं तुम्हें मनोवाञ्छित वस्तु दूँगा। तुम्हारे लिये मुझे कुछ भी अदेय नहीं है।'

विष्णु बोले-नाथ! आपके सामने मुझे क्या कहना है। आप अन्तर्यामी हैं, अतः सब कुछ जानते हैं, तथापि आपके आदेश का गौरव रखने के लिये कहता हूँ। दैत्यों ने सारे जगत को पीड़ित कर रखा है। सदाशिव! हम लोगों को सुख नहीं मिलता। स्वामिन्! मेरा अपना अस्त्र-शस्त्र दैत्यों के वध में काम नहीं देता। परमेश्वर ! इसीलिये मैं आपकी शरण में आया हूँ।

सूतजी कहते हैं-श्रीविष्णु का यह बचन सुनकर देवाधिदेव महेश्वर ने तेजोराशिमय अपना सुदर्शन चक्र उन्हें दे दिया। उसको पाकर भगवान् विष्णु ने उन समस्त प्रबल दैत्यों का उस चक्र के द्वारा बिना परिश्रम के ही संहार कर डाला। इससे सारा जगत् स्वस्थ हो गया। देवताओं को भी सुख मिला और अपने लिये उस आयुध को पाकर भगवान विष्णु जी अत्यन्त प्रसन्न एवं परम सुखी हो गये।

ऋषियों ने पूछा-शिव के सहस्र नाम कौन-कौन हैं, बताइये, जिनसे संतुष्ट होकर महेश्वर ने श्रीहरि को चक्र प्रदान किया था। उन नामों के माहात्म्य का वर्णन कीजिये। श्रीविष्णु के ऊपर शंकरजी की जैसी कृपा हुई थी, उसका यथार्थरूप से प्रतिपादन कीजिये।

शुद्ध अन्तःकरण वाले उन मुनियों की वैसी बात सुनकर सूत ने शिव के चरणारविन्दों का चिन्तन करके इस प्रकार कहना आरम्भ किया।

★ ★ ★

भगवान विष्णु द्वारा पठित

शिवसहस्रनाम-स्तोत्र

सूत उवाच

श्रूयतां भो ऋषिश्रेष्ठा येन तुष्टो महेश्वरः ।
तदहं कथयाम्यद्य शैवं नामसहस्रकम् ।।१।।

सूतजी बोले-मुनिवरो ! सुनो, जिससे महेश्वर संतुष्ट होते हैं, वह शिवसहस्रनाम-स्तोत्र आज तुम सबको सुना रहा हूँ ।

विष्णुरुवाच

शिवो हरो मृडो रुद्रः पुष्करः पुष्पलोचनः ।
अर्थिगम्यः सदाचारः शर्वः शम्भुर्महेश्वरः ।।२।।

भगवान विष्णु ने कहा-१ शिवः-कल्याण स्वरूप, **२ हरः**- भक्तों के पाप-ताप हर लेने वाले, **३ मृडः**- सुखदाता, **४ रुद्रः**-दुःख दूर करने वाले, **५ पुष्करः**-आकाशस्वरूप, **६ पुष्पलोचनः**-पुष्प के समान खिले हुए नेत्र वाले, ७ **अर्थिगम्यः**-प्रार्थियों को प्राप्त होने वाले, **८ सदाचारः**-श्रेष्ठ आचरण वाले, **९ शर्वः**-संहारकारी, **१० शम्भुः**-कल्याण निकेतन, **११ महेश्वरः**- महान् ईश्वर ।।२।।

चन्द्रापीडश्चन्द्रमौलिर्विश्वं विश्वम्भरेश्वरः ।
वेदान्तसारसंदोहः कपाली नीललोहितः ।।३।।

१२ **चन्द्रापीडः**-चन्द्रमा को शिरोभूषण के रूप में धारण करने वाले, १३ **चन्द्रमौलिः**-सिर पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाले, १४ **विश्वम्**-सर्वस्वरूप, १५ **विश्वाम्भरेश्वरः**- विश्व का भरण-पोषण करने वाले श्रीविष्णु के भी ईश्वर, १६ **वेदान्तसारसंदोहः**- वेदान्त के सारतत्व सच्चिदानन्दमय ब्रह्म की साकार मूर्ति, १७ **कपाली**-हाथ में कपाल धारण करने वाले, १८ **नीललोहितः**- (गले में) नील और (शेष अंगों में) लोहित वर्ण वाले ।।३।।

ध्यानाधारोअपरिच्छेद्यो गौरीभर्ता गणेश्वरः ।
अष्टमूर्तिविश्वमूर्तिस्त्रिवर्गस्वर्गसाधनः ।।४।।

१९ **ध्यानाधारः**- ध्यान के आधार, २० **अपरिच्छेद्यः**- देश, काल और वस्तु की सीमा से अविभाज्य, २१ **गौरीभर्ता**-गौरी अर्थात् पार्वतीजी के पति, २२ **गणेश्वरः**- प्रमथगणों के स्वामी, २३ **अष्टमूर्तिः**-जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी और यजमान-इन आठ रूपों वाले, २४ **विश्वमूर्तिः**-अखिल ब्रह्माण्डमय विराट् पुरूष, २५ **त्रिवर्गस्वर्गसाधनः**-धर्म, अर्थ, काम तथा स्वर्ग की प्राप्ति कराने वाले ।।४।।

ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञो देवदेवस्त्रिलोचनः ।
वामदेवो महादेवः पटुः परिवृढो दृढः ।।५।।

२६ **ज्ञानगम्यः**- ज्ञान से ही अनुभव में आने के योग्य, २७ **दृढ़प्रज्ञः**- सुस्थिर बुद्धिवाले, २८ **देवदेवः**- देवताओं के भी आराध्य, २९ **त्रिलोचनः**- सूर्य, चन्द्रमा और अग्निरूप तीन नेत्रों वाले, ३० **वामदेवः**- लोक के विपरीत स्वभाव वाले देवता, ३१ **महादेवः**- महान् देवता ब्रह्मादिकों के भी पूजनीय, ३२ **पटुः**-सब कुछ करने में समर्थ एवं कुशल, ३३ **परिवृढः**- स्वामी, ३४ **दृढः**- कभी अविचलित न होने वाले।।५।।

विश्वरूपो विरूपाक्षो वागीशः शुचिसत्तमः ।
सर्वप्रमाणसंवादी वृषांको वृषवाहनः ।।६।।

३५ **विश्वरूपः**- जगत्स्वरूप, ३६ **विरूपाक्षः**- विकट नेत्रवाले, ३७ **वागीशः**- वाणी के अधिपति, ३८ **शुचिसत्तमः**- पवित्र पुरूषों में भी सबसे श्रेष्ठ, ३९ **सर्वप्रमाणसंवादीः**- सम्पूर्ण प्रमाणों में सामञ्जस्य स्थापित करने वाले, ४० **वृषांकः**- अपनी ध्वजा में वृषभ का चिन्ह धारण करने वाले, ४१ **वृषवाहनः**- वृषभ या धर्म को वाहन बनाने वाले।।६।।

ईशः पिनाकी खट्वांगी चित्रवेषश्चिरंतनः ।
तमोहरो महायोगी गोप्ता ब्रह्मा च धूर्जटिः ।।७।।

४२ **ईशः**-स्वामी या शासक, ४३ **पिनाकी**-पिनाक नामक धनुष धारण करने वाले, ४४ **खट्वांगी**-खाट के पाये की आकृति का एक आयुध धारण करने वाले, ४५ **चित्रवेषः**- विचित्र वेषधारी, ४६

चिरंतनः-पुराण (अनादि) पुरूषोत्तम, ४७ तमोहरः-अज्ञानान्धक
को दूर करने वाले, ४८ महायोगी- महान् योग से सम्पन्न, ४९ गोप्त
रक्षक, ५० ब्रह्मा- सृष्टिकर्ता, ५१ धूर्जटिः-जटा के भार से युक्त ।।७।

कालकालः कृत्तिवासाः सुभगः प्रणवात्मकः ।
उन्नघ्रः पुरुषो जुष्यो दुर्वासाः पुरशासनः ।।८।।

५२ कालकालः- काल के भी काल, ५३ कृत्तिवासाः-गजासुर
चर्म को वस्त्र के रूप में धारण करने वाले, ५४ सुभगः- सौभाग्यशाली
५५ प्रणवात्मकः-ओंकार स्वरूप अथवा प्रणव के वाच्यार्थ
५६ उन्नघ्रः- बन्धनरहित, ५७ पुरुषः- अन्तर्यामी आत्मा, ५८ जुष्यः
सेवन करने योग्य, ५९ दुर्वासाः- 'दुर्वासा' नामक मुनि के रूप मे
अवतीर्ण, ६० पुरशासनः- तीन मायामय असुर-पुरों का दमन करने
वाले ।।८।।

दिव्यायुधः स्कन्दगुरुः परमेष्ठी परात्परः ।
अनादिमध्यनिधनो गिरीशो गिरिजाधवः ।।९।।

६१ दिव्यायुधः-'पाशुपत' आदि दिव्य अस्त्र धारण करने वाले,
६२ स्कन्दगुरुः'कार्तिकेयजी के पिता, ६३ परमेष्ठीः-अपनी प्रकृष्ट
महिमा में स्थित रहने वाले, ६४ परात्परः- कारण के भी कारण,
६५ अनादिमध्यनिधनः-आदि, मध्य और अन्त से रहित, ६६ गिरीशः-
कैलाश के अधिपति, ६७ गिरिजाधवः- पार्वती के पति ।।९।।

कुबेरबन्धुः श्रीकण्ठो लोकवर्णोत्तमो मृदुः ।
समाधिवेद्यः कोदण्डी नीलकण्ठः परश्वधी ।।१०।।

६८ **कुबेरबन्धुः**- कुबेर को अपना बन्धु (मित्र) मानने वाले, ६९ **श्रीकण्ठः**-श्यामसुषमा से सुशोभित कण्ठवाले, ७० **लोकवर्णोत्तमः**- समस्त लोकों और वर्णों से श्रेष्ठ, ७१ **मृदुः**- कोमल स्वभाव वाले, ७२ **समाधिवेद्यः**-समाधि अथवा चित्तवृत्तियों के निरोध से अनुभव में आने योग्य, ७३ **कोदण्डी**-धनुर्धर, ७४ **नीलकण्ठः**- कण्ठ में हालाहल विष का नील चिन्ह धारण करने वाले, ७५ **परश्वधी**-परशुधारी ।।१०।।

विशालाक्षो मृगव्याधः सुरेशः सूर्यतापनः ।
धर्मधाम क्षमाक्षेत्रं भगवान् भगनेत्रभित् ।।११।।

७६ **विशालाक्षः**- बड़े-बड़े नेत्रों वाले, ७७ **मृगव्याधः**- वन में व्याध या किरात के रूप में प्रकट हो शूकर के ऊपर बाण चलाने वाले, ७८ **सुरेशः**- देवताओं के स्वामी, ७९ **सूर्यतापनः**- सूर्य को भी दण्ड देने वाले, ८० **धर्मधाम**- धर्म के आश्रय, ८१ **क्षमाक्षेत्रम्**- क्षमा के उत्पत्ति-स्थान, ८२ **भगवान्**- सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान तथा वैराग्य के आश्रय, ८३ **भगनेत्रभित्**- भगदेवता के नेत्र का भेदन करने वाले ।।११।।

उग्र पशुपतिस्तार्क्ष्यः प्रियभक्तः परंतपः ।
दाता दयाकरो दक्षः कपर्दी कामवासनः ।।१२।।

८४ **उग्र**- संहार काल में भयंकर रूप धारण करने वाले, ८५ **पशुपतिः**- मायारूप में बँधे हुए पाशबद्ध पशुओं (जीवों) को तत्वज्ञान के द्वारा मुक्त करके यथार्थ रूप से उनका पालन करने वाले, ८६ **तार्क्ष्यः**- गरुड़ रूप, ८७ **प्रियभक्तः**- भक्तों से प्रेम करने वाले, ८८ **परंतपः**- शत्रुता रखने वालों को संताप देने वाले, ८९ **दाता**- दानी, ९० **दयाकरः**- दयानिधान अथवा कृपा करने वाले, ९१ **दक्षः**- कुशल, ९२ **कपर्दी**- जटाजूट धारी, ९३ **कामशासनः**- कामदेव का दमन करने वाले ।।१२।।

श्मशाननिलयः सूक्ष्मः श्मशानस्थो महेश्वरः।
लोककर्ता मृगपतिर्महाकर्ता महौषधि ।।१३।।

९४ **श्मशाननिलयः**- श्मशानवासी, ९५ **सूक्ष्मः**- इन्द्रियातीत एवं सर्वव्यापी, ९६ **श्मशानस्थः**- श्मशान भूमि में विश्राम करने वाले, ९७ **महेश्वरः**- महान् ईश्वर या परमेश्वर, ९८ **लोककर्ता**- जगत् की सृष्टि करने वाले, ९९ **मृगपतिः**- मृग के पालक या पशुपति, १०० **महाकर्ता**- विराट् ब्रह्माण्ड की सृष्टि करने के समय महान कर्तृत्व से सम्पन्न, १०१ **महौषधिः**- भवरोग का निवारण करने के लिए महान् औषधिरूप ।।१३।।

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
नीतिः सुनीतिः शुद्धात्मा सोमः सोमरतः सुखीः ।।१४।।

१०२ उत्तरः- संसार सागर से पार उतारने वाले, १०३ गोपतिः- स्वर्ग, पृथ्वी, पशु, वाणी, किरण, इन्द्रिय और जल के स्वामी, १०४ गोप्ता- रक्षक, १०५ ज्ञानगम्यः- तत्वज्ञान के द्वारा ज्ञानस्वरूप से ही जानने योग्य, १०६ पुरातनः- सबसे पुराने, १०७ नीतिः- न्याय-स्वरूप, १०८ सुनीतिः- उत्तम नीति वाले, १०९ शुद्धात्मा-विशुद्ध आत्मस्वरूप, ११० सोमः- उमासहित, १११ सोमरतः- चन्द्रमा पर प्रेम रखने वाले, ११२ सुखी-आत्मानन्द से परिपूर्ण।।१४।।

सोमपो अमृतपः सौम्यो महातेजा महाद्युतिः।
तेजोमयोअमृतमयोअन्नमयश्च सुधापतिः ।।१५।।

११३ सोमपः- सोमपान करने वाले अथवा सोमनाथ रूप से चन्द्रमा के पालक, ११४ अमृतपः- समाधि के द्वारा स्वरूप भूत अमृत का पान करने वाले, ११५ सौम्यः- भक्तों के लिये सौम्य रूपधारी, ११६ महातेजः- महान् तेज से सम्पन्न, ११७ महाद्युतिः- परमकान्तिमान्, ११८ तेजोमयः- प्रकाश स्वरूप, ११९ अमृतमयः- अमृतरूप, १२० अन्नमयः- अन्नरूप, १२१ सुधापतिः- अमृत के पालक।।१५।।

अजातशत्रुरालोकः सम्भाव्यो हव्यवाहनः ।
लोककरो वेदकरः सूत्रकारः सनातनः ।।१६।।

१२२ अजातशत्रुः- जिनके मन में कभी किसी के प्रति शत्रुभाव नहीं पैदा हुआ, ऐसे समदर्शी, १२३ आलोकः- प्रकाशस्वरूप, १२४ सम्भाव्यः- सम्माननीय, १२५ हव्यवाहनः- अग्निस्वरूप,

१२६ लोककरः- जगत् के स्रष्टा, **१२७ वेदकरः**- वेदों के प्रकट करने वाले, **१२८ सूत्रकारः**- ढक्कनाद के रूप मे चतुर्दश माहेश्वर सूत्रों के प्रणेता, **१२९ सनातनः**- नित्य स्वरूप ।।१६।।

महर्षिकपिलाचार्यो विश्वदीप्तिस्त्रिलोचनः ।
पिनाकपाणिर्भूदेवः स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्सुधी ।।१७।।

१३० महर्षिकपिलाचार्यः- सांख्यशास्त्र के प्रणेता भगवान् कपिलाचार्य, **१३१ विश्वदीप्तिः**- अपनी प्रभा से सबको प्रकाशित करने वाले, **१३२ त्रिलोचनः**- तीनों लोकों के द्रष्टा, **१३३ पिनाकपाणिः**- हाथ में पिनाक नामक धनुष धारण करने वाले, **१३४ भूदेवः**- पृथ्वी के देवता-ब्राह्मण अथवा पार्थिवलिंगरूप, **१३५ स्वास्तिदः**- कल्याणदाता, **१३६ स्वस्तिकृत्**- कल्याणकारी, **१३७ सुधीः**- विशुद्ध बुद्धिवाले ।।१७।।

धातृधामा धामकरः सर्वगः सर्वगोचरः ।
ब्रह्मसृग्विश्वसृक्सर्ग कर्णिकारप्रियः कविः ।।१८।।

१३८ धातृधामाः- विश्व का धारण-पोषण करने में समर्थ तेजवाले, **१३९ धामकरः**- तेज की सृष्टि करने वाले, **१४० सर्वगः**- सर्वव्यापी, **१४१ सर्वगोचरः**- सबमें व्याप्त, **१४२ ब्रह्मसृक्**- ब्रह्मा जी के उत्पादक, **१४३ विश्वसृक्**-जगत के स्रष्टा, **१४४ सर्गः**- सृष्टि स्वरूप, **१४५ कर्णिकारप्रियः**- कनेर के फूल को पसंद करने वाले, **१४६ कविः**- त्रिकालदर्शी ।।१८।।

शाखो विशाखो गोशाखः शिवो भिषगनुत्तमः ।
गंगाप्लवोदको भव्यः पुष्कलः स्थपतिः स्थिरः ।।१९।।

१४७ **शाखः**- कार्तिकेय के छोटे भाई शाखं स्वरूप, १४८ **विशाखः**- स्कन्द के छोटे भाई विशाखस्वरूप अथवा विशाख नामक ऋषि, १४९ **गोशाखः**- वेदवाणी की शाखाओं का विस्तार करने वाले, १५० **शिवः**- मंगलमय, १५१ **भिषगनुत्तमः**- भवरोग का निवारण करने वाले वैद्यों (ज्ञानियों) में सर्वश्रेष्ठ, १५२ **गंगाप्लवोदकः**- गंगा के प्रवाहरूप जल को सिर पर धारण करने वाले, १५३ **भव्यः**- कल्याण स्वरूप, १५४ **पुष्कलः**- पूर्णतम अथवा व्यापक, १५५ **स्थपतिः**- ब्रह्माण्डरूपी भवन के निर्माता (थवई), १५६ **स्थिरः**- अचञ्चल अथवा स्थाणुरूप ।१९।।

विजितात्मा विधेयात्मा भूतवाहनसारथिः ।
सगणो गणकायश्च सुकीर्तिश्छिन्नसंशयः ।।२०।।

१५७ **विजितात्मा**- मन को वश में रखने वाले, १५८ **विधेयात्मा**- शरीर, मन और इन्द्रियों से अपनी इच्छा के अनुसार काम लेने वाले, १५९ **भूतवाहन सारथिः**- पाञ्चभौतिक रथ (शरीर) का संचालन करने वाले बुद्धिरूप सारथि, १६० **सगणः**- प्रमथगणों के साथ रहने वाले, १६१ **गणकायः**- गणस्वरूप, १६२ **सुकीर्तिः**- उत्तम कीर्तिवाले, १६३ **छिन्नसंशयः**- संशयों का काट देने वाले ।।२०।।

कामदेवः कामपालो भस्माद्धूलितविग्रहः ।
भस्मप्रियो भस्मशायी कामी कान्तः कृतागमः।।२१।।

१६४ कामदेवः- मनुष्यों द्वारा अभिलषित समस्त कामनाओं के अधिष्ठाता परमदेव, **१६५ कामपालः**- सकाम भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करने वाले, **१६६ भस्मोद्धूलितविग्रहः**- अपने श्रीअंगों में भस्म रमाने वाले, **१६७ भस्मप्रियः**- भस्म के प्रेमी, **१६८ भस्मशायी**- भस्म पर शयन करने वाले, **१६९ कामी**- अपने प्रिय भक्तों को चाहने वाले, **१७० कान्तः**- परम कमनीय प्राणवल्लभरूप, **१७१ कृतागमः**- समस्त तन्त्रशास्त्रों के रचयिता ।।२१।।

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा धर्मपुञ्जः सदाशिवः ।
अकल्मषश्चतुर्बाहुर्दुरावासो दुरासदः ।।२२।।

१७२ समावर्तः- संसार चक्र को भली भांति घुमाने वाले, **१७३ अनिवृत्तात्मा**-सर्वत्र विद्यमान होने के कारण जिनकी आत्मा कहीं से भी हटी नहीं है, ऐसे, **१७४ धर्मपुञ्जः**- धर्म या पुण्य की राशि, **१७५ सदाशिवः**- निरंन्तर कल्याणकारी, **१७६ अकल्मषः**- पापरहित, **१७७ चतुर्बाहुः**- चार भुजाधारी, **१७८ दुरावासः**- जिन्हें योगीजन भी बड़ी कठिनाई से अपने हृदयमन्दिर में बसा पाते हैं, ऐसे, **१७९ दुरासदः**- परम दुर्जय ।।२२।।

दुर्लभो दुर्गमो दुर्गः सर्वायुधविशारदः ।
अध्यात्मयोगनिलयः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।।२३।।

१८० दुर्लभः- भक्तिहीन पुरुषों को कठिनता से प्राप्त होने वाले, १८१ दुर्गमः- जिनके निकट पहुँचना किसी के लिये भी कठिन है ऐसे, १८२ दुर्गः- पाप-ताप से रक्षा करने के लिये दुर्गरूप अथवा दुर्ज्ञेय, १८३ सर्वायुधविशारदः- सम्पूर्ण अस्त्रों के प्रयोग की कला में कुशल, १८४ अध्यात्मयोगनिलयः- अध्यात्म योग में स्थित, १८५ सुतन्तुः- सुन्दर विस्तृत जगत् रूप तन्तुवाले, १८६ तन्तुवर्धनः- जगत्रूप तन्तु को बढ़ाने वाले ।।२३।।

शुभांगो लोकसारंगो जगदीशो जनार्दनः ।
भस्मशुद्धिकरो मेरुरोजस्वी शुद्धविग्रह ।।२४।।

१८७ शुभांग :- सुन्दर अंगों वाले, १८८ लोकसारंगः- लोकसारग्राही, १८९ जगदीशः- जगत् के स्वामी, १९० जनार्दनः- भक्तजनों की याचना के आलम्बन, १९१ भस्मशुद्धिकरः- भस्म से शुद्धि का सम्पादन करने वाले, १९२ मेरुः- सुमेरु पर्वत के समान केन्द्ररूप, १९३ ओजस्वी- तेज और बल से सम्पन्न, १९४ शुद्धविग्रहः- निर्मल शरीरवाला ।।२४।

असाध्यः साधुसाध्यश्च भृत्यमर्कटरूपधृक् ।
हिरण्यरेताः पौराणो रिपुजीवहरो बली ।।२५।।

१९५ असाध्यः- साधन-भजन से दूर रहने वाले लोगों के लिये अलभ्य, १९६ साधुसाध्यः- साधन-भजन परायण सत्पुरूषों के लिये सुलभ, १९७ भृत्यमर्कटरूपधृक्- श्रीराम के सेवक वानर हनुमान् का

रूप धारण करने वाले, १९८ **हिरण्यरेताः**- अग्नि स्वरूप अथवा सुवर्णमय वीर्य वाले, १९९ **पौराणः**- पुराणों द्वारा प्रतिपादित, २०० **रिपुजीवहरः**- शत्रुओं के प्राण हर लेने वाले, २०१ **बली**-बलशाली ।।२५।।

महाहदो महागर्तः सिद्धवृन्दारवन्दितः ।
व्याघ्रचर्माम्बरो व्याली महाभूतो महानिधि।। २६।।

२०२ **महाहदः**- परमानन्द के महान् सरोवर, २०३ **महागर्तः**- महान् आकाशरूप, २०४ **सिद्ध वृन्दारवन्दितः**- सिद्धों और देवताओं द्वारा वन्दित, २०५ **व्याघ्रचर्माम्बरः**- व्याघ्र चर्म को वस्त्र के समान धारण करने वाले, २०६ **व्याली**-सर्पों को आभूषण की भाँति धारण करने वाले, २०७ **महाभूतः**- त्रिकाल में भी कभी नष्ट न होने वाले महाभूत स्वरूप, २०८ **महानिधिः**- सबके महान् निवासस्थान ।।२६।।

अमृताशोअमृतवपुः पाञ्चजन्यः प्रभञ्जनः ।
पञ्चविंशतितत्वस्थः पारिजातः परावरः ।। २७।।

२०९ **अमृताशः**- जिनकी आशा कभी विफल न हो ऐसे अमोघसंकल्प, २१० **अमृतवपुः**- जिनका कलेवर कभी नष्ट न हो ऐसे-नित्यविग्रह, २११ **पाञ्चजन्यः**- पाञ्चजन्य नामक शंखस्वरूप, २१२ **प्रभञ्जनः**- वायुस्वरूप अथवा संहारकारी, २१३ **पञ्चविंशतितत्वस्थः**- प्रकृति, महत्तत्व (बुद्धि), अहंकार, चक्षु, श्रोत्र, रसना, त्वक्, वाक्, पाणि, पायु, पाद, उपस्थ, मन, शब्द, स्पर्श, रूप,

रस, गन्ध, पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश-इन चौबीस जड़ तत्वों सहित पचीसवें चेतनतत्व पुरुष में व्याप्त, २१४ **पारिजातः**- याचकों की इच्छा पूर्ण करने में कल्पवृक्षरूप, २१५ **परावरः**-कारण-कार्यरूप ।।२७।।

सुलभः सुव्रतः शूरो ब्रह्मवेदनिधिर्निधिः ।
वर्णाश्रमगुरूर्वर्णी शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।।२८।।

२१६ **सुलभः**- नित्य निरन्तर चिन्तन करने वाले एकनिष्ठ श्रद्धालू भक्त को सुगमता से प्राप्त होने वाले, २१७ **सुव्रतः**- उत्तम व्रतधारी, २१८ **शूरः**- शौर्य-सम्पन्न, २१९ **ब्रह्मवेदनिधिः**- ब्रह्म और वेद के प्रादुर्भाव के स्थान, २२० **निधिः**- जगत्रूपी रत्न के उत्पत्तिस्थान, २२१ **वर्णाश्रमगुरुः**- वर्णों और आश्रमों के गुरु (उपदेष्टा), २२२ **वर्णी**-ब्रह्मचारी, २२३ **शत्रुजित्**-अन्धकासुर आदि शत्रुओं को जीतने वाले, २२४ **शत्रुपातनः**- शत्रुओं को संताप देने वाले ।।२८।।

आश्रमः क्षपणः क्षामो ज्ञानवानचलेश्वरः।
प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः सुपर्णो वायुवाहनः ।।२९।।

२२५ **आश्रमः**- सबके विश्रामस्थान, २२६ **क्षपणः**- जन्म-मरण के कष्ट का मूलोच्छेद करने वाले, २२७ **क्षामः**- प्रलयकाल में प्रजा को क्षीण करने वाले, २२८ **ज्ञानवान्**- ज्ञानी, २२९ **अचलेश्वरः**- पर्वतों अथवा स्थावर पदार्थों के स्वामी, २३० **प्रमाणभूतः**- नित्यसिद्ध प्रमाणरूप, २३१ **दुर्ज्ञेयः**- कठिनता से जानने योग्य, २३२ **सुपर्णः**-

वेदमय सुन्दर पंखवाले, गरूड़ रूप, २३३ **वायुवाहनः**- अपने भय से वायु को प्रवाहित करने वाले।।२९।।

धनुर्धरो धनुर्वेदो गुणराशिर्गुणाकरः ।
सत्यः सत्यपरोअदीनो धर्मांगो धर्मसाधनः।।३०।।

२३४ **धनुर्धरः**- पिनाकधारी, २३५ **धनुर्वेदः**- धनुर्वेद के ज्ञाता, २३६ **गुणराशिः**- अनन्त कल्याणमय गुणों की राशि, २३७ **गुणाकरः**- सद्गुणों की खानि, २३८ **सत्यः**- सत्य-स्वरूप, २३९ **सत्यपरः**- सत्य परायण, २४० **अदीनः**- दीनता से रहित-उदार, २४१ **धर्मांगः**- धर्ममय विग्रह वाले, २४२ **धर्मसाधनः**- धर्म का अनुष्ठान करने वाले।।३०।।

अनन्तरदृष्टिरानन्दो दण्डो दमयिता दमः ।
अभिवाद्यो महामायो विश्वकर्मविशारदः ।।३१।।

२४३ **अनन्तदृष्टिः**- असीमित दृष्टि वाले, २४४ **आनन्दः**- परमानन्दमय, २४५ **दण्डः**- दुष्टों को दण्ड देने वाले अथवा दण्ड स्वरूप, २४६ **दमयिता**-दुर्दान्त दानवों का दमन करने वाले, २४७ **दमः**- दमन स्वरूप, २४८ **अभिवाद्यः**- प्रणाम करने योग्य, २४९ **महामायः**- मायावियों को भी मोहने वाले महामायावी, २५० **विश्वकर्मविशारदः**- संसार की सृष्टि करने में कुशल।।३१।।

वीतरागो विनीतात्मा तपस्वी भूतभावनः ।
उन्मत्तवेषः प्रच्छन्नो जितकामोअजितप्रियः ।।३२।।

२५१ **वीतरागः**- पूर्णतया विरक्त, २५२ **विनीतात्मा**-मन से विनयशील अथवा मन को वश मे रखने वाले, २५३ **तपस्वी**-तपस्यापरायण, २५४ **भूतभावनः**- सम्पूर्ण भूतों के उत्पादक एवं रक्षक, २५५ **उन्मत्तवेषः**- पागलों के समान वेष धारण करने वाले, २५६ **प्रच्छन्नः**- माया के पर्दे में छिपे हुए, २५७ **जितकामः**- कामविजयी, २५८ **अजितप्रियः**- भगवान् विष्णु के प्रेमी ।।३२।।

कल्याणप्रकृतिः कल्पः सर्वलोक प्रजापतिः ।
तरस्वी तारको धीमान् प्रधानः प्रभुरव्ययः ।।३३।।

२५९ **कल्याणप्रकृतिः**- कल्याणकारी स्वभाव वाले, २६० **कल्पः**- समर्थ, २६१ **सर्वलोकप्रजापतिः**- सम्पूर्ण लोकों की प्रजा के पालक, २६२ **तरस्वी**-वेग शाली, २६३ **तारकः**- उद्धारक, २६४ **धीमान्**-विशुद्ध बुद्धि से युक्त, २६५ **प्रधानः**- सबसे श्रेष्ठ, २६६ **प्रभुः**- सर्वसमर्थ, २६७ **अव्ययः**- अविनाशी ।।३३।।

लोकपालोअन्तर्हितात्मा कल्पादिः कमलेक्षणः।
वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञोअनियमो नियताश्रयः ।।३४।

२६८ **लोकपालः**- समस्त लोकों की रक्षा करने वाले, २६९ **अन्तर्हितात्मा**-अन्तर्यामी आत्मा अथवा अदृश्य स्वरूप वाले, २७० **कल्पादिः**- कल्प के आदि कारण, २७१ **कमलेक्षणः**- कमल के समान नेत्र वाले, २७२ **वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञः**- वेदों और शास्त्रों के अर्थ एवं तत्व को जानने वाले, २७३ **अनियमः**- नियन्त्रण रहित, २७४ **नियताश्रयः**- सबके सुनिश्चित आश्रय स्थान ।।३४।।

चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्वरांगो विद्रुमच्छविः ।
भक्तिवश्यः परब्रह्म मृगवाणार्पणोअनघः ।। ३५।।

२७५ चन्द्रः- चन्द्रमा रूप से आह्लादकारी, २७६ सूर्यः- सबकी उत्पत्ति के हेतुभूत सूर्य, २७७ शनिः- शनैश्वर रूप, २७८ केतुः- केतु नामक ग्रहस्वरूप, २७९ वरांगः- सुन्दर शरीर वाले, २८० विद्रुमच्छविः- मूँगे की सी लाल कान्ति वाले, २८१ भक्तिवश्यः- भक्ति के द्वारा भक्त के वश में होने वाला, २८२ परब्रह्म-परमात्मा, २८३ मृगबाणार्पणः- मृगरूपधारी यज्ञ बाण चलाने वाले, २८४ अनघः- पाप रहित ।।३५।।

अद्रिरद्रयालयः कान्तः परमात्मा जगद्गुरुः ।
सर्वकर्मालयस्तुष्टो मंगल्यो मंगलावृतः ।। ३६।।

२८५ अद्रिः- कैलाश आदि पर्वतस्वरूप, २८६ अद्रयालयः- कैलाश और मन्दर आदि पर्वतों पर निवास करने वाले, २८७ कान्तः- सबके प्रियतम, २८८ परमात्मा-परब्रह्म परमेश्वर, २८९ जगद्गुरुः- समस्त संसार के गुरु, २९० सर्वकर्मालयः- सम्पूर्ण कर्मों के आश्रयस्थान, २९१ तुष्टः- सदा प्रसन्न, २९२ मंगल्यः- मंगलकारी, २९३ मंगलावृतः मंगलकारिणी शक्ति से संयुक्त ।।३६।।

महातपा दीर्घतपाः स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः।
अहःसंवत्सरो व्याप्ति प्रमाणं परम तपः।। ३७।।

२९४ **महातपाः**- महान् तपस्वी, २९५ **दीर्घतपाः**- दीर्घकाल तक तप करने वाले, २९६ **स्थविष्ठः**- अत्यन्त स्थूल, २९७ **स्थविरो ध्रुवः**- अति प्राचीन एवं अत्यन्त स्थिर, २९८ **अहःसंवत्सरः**- दिन एवं संवत्सर आदिकाल रूप से स्थित , अंशकालस्वरूप, २९९ **व्याप्तिः**- व्यापकता स्वरूप, ३०० **प्रमाणम्**- प्रत्याक्षादि प्रमाणस्वरूप, ३०१ **परमं तपः**- उत्कृष्ट तपस्यास्वरूप ।

संवत्सरकरो मन्त्रप्रत्ययः सर्वदर्शनः ।
अजः सर्वेश्वरः सिद्धो महारेता महाबलः ।।३८।।

३०२ **संवत्सरकरः**- संवत्सर आदि काल विभाग के उत्पादक, ३०३ **मन्त्रप्रत्ययः**- वेद आदि मन्त्रों से प्रतीत (प्रत्यक्ष) होने योग्य, ३०४ **सर्वदर्शनः**- सबके साक्षी, ३०५ **अजः**- अजन्मा, ३०६ **सर्वेश्वरः**- सबके शासक, ३०७ **सिद्धः**- सिद्धियों के आश्रम, ३०८ **महारेताः**- श्रेष्ठ वीर्य वाले, ३०९ **महाबलः**- प्रमथ गणों की महती सेना से सम्पन्न ।।३८।।

योगी योग्यो महातेजाः सिद्धिः सर्वादिरग्रहः ।
वसुर्वसुमनाः सत्यः सर्वपापहरो हरः ।।३९।।

३१० **योगी योग्यः**- सुयोग्य योगी, ३११ **महातेजाः**- महान् तेज से सम्पन्न, ३१२ **सिद्धिः**- समस्त साधनों के फल, ३१३ **सर्वादिः**- सब

भूतों के आदिकारण, ३१४ **अग्रहः**- इन्द्रियों की शक्ति के अविषय, ३१५ **वसुः**- सब भूतों के वासस्थान, ३१६ **वसुमनाः**- उदार मन वाले, ३१७ **सत्यः**- सत्यस्वरूप, ३१८ **सर्वपापहरो हरः**- समस्त पापों का अपहरण करने के कारण हर नाम से प्रसिद्ध ।।३६ ।।

सुकीर्तिशोभनः श्रीमान् वेदांगो वेदविन्मुनिः ।
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता लोकनाथो दुराधरः ।।४०।।

३१६ **सुकीर्तिशोभनः**- उत्तम कीर्ति से सुशोभित होने वाले, ३२० **श्रीमान्**-विभूतिस्वरूपा उमा से सम्पन्न, ३२१ **वेदांगः**- वेदरूप अंगों वाले, ३२२ **वेदविन्मुनिः**- वेदों का विचार करने वाले मननशील मुनि, ३२३ **भ्राजिष्णुः**- एकरस प्रकाश स्वरूप, ३२४ **भोजनम्**-ज्ञानियों द्वारा भोगने योग्य अमृतस्वरूप, ३२५ **भोक्ता**- पुरूषरूप से उपभोग करने वाले, ३२६ **लोकनाथः**- भगवान् विश्वनाथ, ३२७ **दुराधरः**- अजितेन्द्रिय पुरुषों द्वारा जिनकी अराधना अत्यन्त कठिन है, ऐसे ।।४० ।।

अमृतः शाश्वतः शान्तो बाणहस्तः प्रतापवान्।
कमण्डलुधरो धन्वी अवांगमनसगोचरः ।।४१।।

३२८ **शान्तः**- शान्तिमय, ३३० **बाणाहस्तः प्रतापवान्**-हाथ में बाण धारण करने वाले प्रतापी वीर, ३३१ **कमण्डलुधरः**- कमण्डलु धारण करने वाले, ३३२ **धन्वी**-पिनाकधारी, ३३३ **अवांग-मन सगोचरः**- मन और वाणी के अविषय ।।४ ।।

अतीन्द्रियो महामायः सर्वावासश्चतुष्पथः ।
कालयोगी महानादो महोत्साहो महाबलः ।।४२।।

३३४ **अतीन्द्रियो महामायः**- इन्द्रियातीत एवं महामायावी, ३३५ **सर्वावासः**- सबके वासस्थान, ३३६ **चतुष्पथः**- चारों पुरुषार्थों की सिद्धि के एकमात्र मार्ग, ३३७ **कालयोगी**-प्रलय के समय सबको काल से संयुक्त करने वाले, ३३८ **महानादः**- गम्भीर शब्द करने वाले अथवा अनाहत नादरूप, ३३९ **महोत्साहो महाबलः**- महान उत्साह और बल से सम्पन्न ।।४२।।

महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचारी पुरंदरः ।
निशाचरः प्रेतचारी महाशक्तिर्महाद्युतिः ।।४३।।

३४० **महाबुद्धिः**- श्रेष्ठ बुद्धि वाले, ३४१ **महावीर्यः**- अनन्त पराक्रमी, ३४२ **भूतचारी**-भूत गणों के साथ विचरने वाले, ३४३ **पुरंदरः**- त्रिपुर संहारक, ३४४ **निशाचरः**- रात्रि में विचरण करने वाले, ३४५ **प्रेतचारी**-प्रेतों के साथ भ्रमण करने वाले, ३४६ **महाशक्तिर्महाद्युतिः**- अनन्तशक्ति एवं श्रेष्ठ कान्ति से सम्पन्न ।।४३।।

अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् सर्वाचार्यमनोगतिः ।
बहुश्रुतोअमहामायो नियतात्मा ध्रुवो अध्रुवः ।।४४।।

३४७ **अनिर्देश्यवपुः**- अनिर्वचनीय स्वरूप वाले, ३४८ **श्रीमान्**- ऐश्वर्यवान, ३४९ **सर्वाचार्यमनोगतिः**- सबके लिये अविचार्य मनोगति

वाले, ३५० **बहुश्रुतः**- बहुज्ञ अथवा सर्वज्ञ, ३५१ **अमहामायः**- बड़ी से बड़ी माया भी जिन पर प्रभाव नहीं डाल सकती ऐसे, ३५२ **नियतात्मा**- मन को वश में रखने वाले, ३५३ **ध्रुवोअध्रुवः**- ध्रुव (नित्य कारण) और अध्रुव (अनित्य कार्य) रूप ।।४४।।

ओजस्तेजोद्युतिधरो जनकः सर्वशासनः ।
नृत्यप्रियो नित्यनृत्यः प्रकाशात्मा प्रकाशकः।। ४५।।

३५४ **ओजस्तेजोद्युतिधरः**- ओज (प्राण और बल), तेज (शौर्य आदि गुण) तथा ज्ञान की दीप्ति को धारण करने वाले, ३५५ **जनकः**- सबके उत्पादक, ३५६ **सर्वशासनः**- सबके शासक, ३५७ **नृत्यप्रियः**- नृत्य के प्रेमी, ३५८ **नित्यनृत्यः**- प्रतिदिन ताण्डव नृत्य करने वाले, ३५९ **प्रकाशात्मा**-प्रकाशस्वरूप, ३६० **प्रकाशकः**- सूर्य आदि को भी प्रकाश देने वाले ।।४५।।

स्पष्टाक्षरो बुधो मन्त्रः समानः सारसम्प्लवः ।
युगादिकृद्युगावर्तो गम्भीरो वृषवाहनः ।। ४६।।

३६१ **स्पष्टाक्षरः**- ओंकाररूप स्पष्ट अक्षरवाले, ३६२ **बुधः**- ज्ञानवान्, ३६३ **मन्त्रः**- ऋक्, साम और यजुर्वेद के मन्त्रस्वरूप, ३६४ **समानः**- सबके प्रति समान भाव रखने वाले, ३६५ **सारसम्प्लवः**- संसार सागर से पार होने के लिये नौकारूप, ३६६ **युगादिकृद्युगावर्तः**- युगादि का आरम्भ करने वाले तथा चारों युगों को चक्र की तरह घुमाने वाले, ३६७ **गम्भीरः**- गाम्भीर्य से युक्त, ३६८ **वृषवाहनः**- नन्दी नामक वृषभ पर सवार होने वाले ।।४६।।

इष्टोअविशिष्टाः शिष्टेष्टः सुलभः सारशोधनः।
तीर्थरूपस्तीर्थनामा तीर्थदृश्यस्तु तीर्थदः ।।४७।।

३६९ **इष्टः**- परमानन्दस्वरूप होने से सर्वप्रिय, ३७० **अविशिष्टः**- सम्पूर्ण विशेषणों से रहित, ३७१ **शिटेष्टः**- शिष्ट पुरुषों के इष्टदेव, ३७२ **सुलभः**- अनन्यचित्त से निरन्तर स्मरण करने वाले, भक्तों के लिये सुगमता से प्राप्त होने योग्य, ३७३ **सारशोधनः**- सार तत्व की खोज करने वाले, ३७४ **तीर्थरूपः**- तीर्थ स्वरूप, ३७५ **तीर्थनामा**-तीर्थनामधारी, अथवा जिनका नाम भवसागर से पार लगाने वाला है, ऐसे, ३७६ **तीर्थदृश्यः**- तीर्थ सेवन से अपने स्वरूप का दर्शन कराने वाले अथवा गुरुकृपा से प्रत्यक्ष होने वाले, ३७७ **तीर्थदः**- चरणोदकस्वरूप तीर्थ को देने वाले।।४७।।

अपांनिधिरधिष्टानं दुर्जयो जयकालवित् ।
प्रतिष्ठितः प्रमाणज्ञो हिरण्यकवचो हरिः ।।४८।।

३७८ **अपांनिधिः**- जल के निधान समुद रूप, ३७९ **अधिष्ठानम्**-उपादान कारण रूप से सब भूतों के आश्रय अथवा जगत् रूप प्रपञ्च के अधिष्ठान, ३८० **दुर्जयः**- जिनको जीतना कठिन है, ऐसे, ३८१ **जयकालवित्**-विजय के अवसर को समझने वाले, ३८२ **प्रतिष्ठितः**- अपनी महिमा में स्थित, ३८३ **प्रमाणज्ञः**- प्रमाणों के ज्ञाता, ३८४ **हिरण्यकवचः**- सुवर्णमय कवच धारण करने वाले, ३८५ **हरिः**- श्रीहरिस्वरूप।।४८।।

विमोचनः सुरगणो विद्येशो बिन्दुसंश्रयः ।
बालरूपो अलोन्मत्तो अविकर्ता गहनो गुहः ।। ४९।।

३८६ **विमोचनः**- संसार बन्धन से सदा के लिये छुड़ा देने वाले, ३८७ **सुरगणः**- देवसमुदाय रूप, ३८८ **विद्येशः**- सम्पूर्ण विद्याओं के स्वामी, ३८९ **बिन्दु संश्रयः**- बिन्दुरूप प्रणव के आश्रय, ३९० **बालरूपः**- बालक का रूप धारण करने वाले, ३९० **बालरूपः**- बालक का रूप धारण करने वाले, ३९१ **अवलोन्मत्तः**- बल से उन्मत्त न होने वाले, ३९२ **अविकर्ता**-विकार रहित, ३९३ **गहनः**- दुर्बोधस्वरूप या अगम्य, ३९४ **गुहः**- माया से अपने यथार्थ स्वरूप को छिपाये रखने वाले।।४९।।

करणं कारणं कर्ता सर्वबन्धविमोचनः ।
व्यवसायो व्यवस्थानः स्थानदो जगदादिजः ।। ५०।।

३९५ **करणम्**- संसार की उत्पत्ति के सबसे बड़े साधन, ३९६ **कारणम्**- जगत के उपादान और निमित्त कारण, ३९७ **कर्ता**- सबके रचयिता, ३९८ **सर्व बन्धविमोचनः**- सम्पूर्ण बन्धनों से छुड़ाने वाले, ३९९ **व्यवसायः**- सम्पूर्ण जगत् की व्यवस्था करने वाले, ४०१ **स्थानदः**- ध्रुव आदि भक्तों को अविचल स्थिति प्रदान कर देने वाले, ४०२ **जगदादिजः**- हिरण्यगर्भ रुप से जगत् के आदि में प्रकट होने वाले ।।५०।।

गुरुदो ललितो अभेदो भावात्माअत्मनि संस्थितः ।
वीरेश्वरो वीरभद्रो वीरासनविधिर्विराट् ।।५१।।

४०३ **गुरुदः**- श्रेष्ठ वस्तु प्रदान करने वाले अथवा जिज्ञासुओं को गुरु की प्राप्ति कराने वाले, ४०४ **ललितः**- सुन्दर स्वरूप वाले, ४०५ **अभेदः**- भेदरहित, ४०६ **भावात्माअत्मनि संस्थितः**- सत्स्वरूप आत्मा में प्रतिष्ठित, ४०७ **वीरेश्वरः**- वीर शिरोमणि, ४०८ **वीरभद्रः**- वीरभद्र नामक गणाध्यक्ष, ४०९ **वीरा सनविधिः**- वीरासन से बैठने वाले, ४१० **विराट्**-अखिलब्रह्माण्डस्वरूप ।।५१।।

वीरचूडामणिर्वेता चिदानन्दो नदीधरः ।
आज्ञाधारस्त्रिशूली च शिपिविष्टः शिवालयः।।५२।।

४११ **वीरचूडामणिः**- वीरों में श्रेष्ठ, ४१२ वेत्ता-विद्वान्, ४१३ **चिदानन्दः**- विज्ञानानन्दस्वरूप, ४१४ **नदीधरः**- मस्तक पर गंगाजी को धारण करने वाले, ४१५ **आज्ञाधारः**-आज्ञा का पालन करने वाले, ४१६ **त्रिशूली**-त्रिशूलधारी, ४१७ **शिपिविष्टः**- तेजोमयी किरणों से व्याप्त, ४१८ **शिवालयः**- भगवती शिवा के आश्रय ।।५२।।

वालखिल्यो महाचापस्तिग्मांशुर्बधिरः खगः।
अभिरामः सुशरणः सुब्रह्मण्यः सुधापतिः ।।५३।।

४१९ **वालखिल्यः**- वालखिल्य ऋषिरूप, ४२० **महाचापः**- महान् धनुर्धर, ४२१ **तिग्मांशुः**- सूर्यरूप, ४२२ **बधिरः**- लौकिक विषयों की चर्चा न सुनने वाले, ४२३ **खगः**- आकाशचारी, ४२४ **अभिरामः**-

परम सुन्दर, ४२५ **सुशरणः**- सबके लिये सुन्दर आश्रयरूप, ४२६ **सुब्रह्मण्यः**- ब्राह्मणों के परम हितैषी, ४२७ **सुधापतिः**- अमृतकलश के रक्षक।।५३।।

मघवान्कौशिको गोमान्विरामः सर्वसाधनः ।
ललाटाक्षो विश्वदेहः सारः संसारचक्रभृतः ।।५४।।

४२८ **मघवान् कौशिकः**- कुशिकवंशीय इन्द्र स्वरूप, ४२९ **गोमान्**- प्रकाश-किरणों से युक्त, ४३० **विरामः**- समस्त प्राणियों के लय के स्थान, ४३१ **सर्वसाधनः**- समस्त कामनाओं को सिद्ध करने वाले, ४३२ **ललाटाक्षः**- ललाट में तीसरा नेत्र धारण करने वाले, ४३३ **विश्वदेहः**- जगत्स्वरूप, ४३४ **सारः**- सार-तत्वरूप, ४३५ **संसारचक्रभृत्**-संसार चक्र को धारण करने वाले।।५४।।

अमोघदण्डो मध्यस्थो हिरण्ये ब्रह्मवर्चसी ।
परमार्थः परो मायी शम्बरो व्याघ्रलोचनः ।।५५।।

४३६ **अमोघदण्डः**- जिनका दण्ड कभी व्यर्थ नहीं जाता है, ऐसे, ४३७ **मध्यस्थः**- उदासीन, ४३८ **हिरण्यः**- सुवर्ण अथवा तेज स्वरूप, ४३९ **ब्रह्मवर्चसी**-ब्रह्म तेज से सम्पन्न, ४४० **परमार्थः**- मोक्षरूप उत्कृष्ट अर्थ की प्राप्ति कराने वाले, ४४१ **परो मायी**-महामायावी, ४४२ **शम्बरः**- कल्याणप्रद, ४४३ **व्याघ्रलोचनः**- व्याघ्र के समान भयानक नेत्रों वाले।।५५।।

रुचिर्विरञ्चिः स्वर्बन्धुर्वाचस्पतिरहर्पतिः ।
रविर्विरोचनः स्कन्दः शास्ता वैवस्वतो यमः ।।५६।।

४४४ **रुचिः**- दीप्तिरूप, ४४५ **विरञ्चिः**- ब्रह्मस्वरूप, ४४६ **स्वर्बन्धुः**- स्वर्लोक में बन्धु के समान सुखद, ४४७ **वाचस्पतिः**- वाणी के अधिपति, ४४८ **अहर्पतिः**- दिन के स्वामी सूर्यरूप, ४४९ **रविः**- समस्त रसों का शोषण करने वाले, ४५० **विरोचनः**- विविध प्रकार से प्रकाश फैलाने वाले, ४५१ **स्कन्दः**- स्वामी कार्तिकेयरूप, ४५२ **शास्ता वैवस्वतो यमः**- सब पर शासन करने वाले सूर्यकुमार यम ।।५६।।

युक्तिरुन्नतकीर्तिश्च सानुरागः परंजयः ।
कैलासाधिपतिः कान्तः सविता रविलोचनः ।।५७।।

४५३ **युक्तिरुन्नतकीर्तिः**- अष्टांगयोगस्वरूप तथा ऊर्ध्वलोक में फैली हुई कीर्ति से युक्त, ४५४ **सानुरागः**- भक्तजनों पर प्रेम रखने वाले, ४५५ **परंजयः**- दूसरों पर विजय पाने वाले, ४५६ **कैलासाधिपतिः**- कैलास के स्वामी, ४५७ **कान्तः**- कमनीय अथवा कान्तिमान्, ४५८ **सविता**- समस्त जगत् को उत्पन्न करने वाले, ४५९ **रविलोचनः**- सूर्य रूप नेत्र वाले ।।५७।।

विद्वत्तमो वीतभयो विश्वभर्त्तानिवारितः ।
नित्यो नियतकल्याणः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।।५८।।

४६० **विद्वतमः**- विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ, परम विद्वान्, ४६१ **वीतभयः**- सब प्रकार के भय से रहित, ४६२ **विश्वभर्ताः**- जगत का भरण-पोषण करने वाले, ४६३ **अनिवारितः**- जिन्हें कोई रोक नहीं सकता ऐसे, ४६४ **नित्यः**- सत्य स्वरूप, ४६५ **नियतकल्याणः**- सुनिश्चित रूप से कल्याणकारी, ४६६ **पुण्यश्रवण-कीर्तनः**- जिनके नाम, गुण, महिमा और स्वरूप के श्रवण तथा कीर्तन परम पावन हैं, ऐसे ।।५८।।

दूरश्रवा विश्वसहो ध्येयो दुःस्वप्ननाशनः ।
उत्तारणो दुष्कृतिहा विज्ञेयो दुस्सहो अभवः ।।५९।।

४६७ **दूरश्रवाः**- सर्वव्यापी होने के कारण दूर की बात भी सुन लेने वाले, ४६८ **विश्वसहः**- भक्तजनों के सब अपराधों को कृपापूर्वक सह लेने वाले, ४६९ **ध्येयः**- ध्यान करने योग्य, ४७० **दुःस्वप्ननाशनः**- चिन्तन करने मात्र से बुरे स्वप्नों का नाश करने वाले, ४७१ **उत्तारणः**- संसार सागर से पार उतारने वाले, ४७२ **दुष्कृतिहा**- पापों का नाश करने वाले, ४७३ **विज्ञेयः**- जानने के योग्य, ४७४ **दुस्सहः**- जिनके वेग को सहन करना दूसरों के लिये अत्यन्त कठिन है, ऐसे, ४७५ **अभवः**- संसार-बन्धन से रहित अथवा अजन्मा ।।५९।।

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मी किरीटी त्रिदशाधिपः ।
विश्वगोप्ता विश्वकर्त्ता सुवीरो रूचिरांगदः ।।६०।।

४७६ **अनादिः**- जिनका कोई आदि नहीं है, ऐसे सबके कारण स्वरूप, ४७७ **भूर्भवो लक्ष्मीः**- भूर्लोक और भुवर्लोक की शोभा, ४७८ **किरीटी**- मुकुटधारी, ४७९ **त्रिदशाधिपः**- देवताओं के स्वामी, ४८० **विश्वगोप्ता**- जगत् के रक्षक, ४८१ **विश्वकर्ता**- संसार की सृष्टि करने वाले, ४८२ **सुवीरः**- श्रेष्ठ वीर, ४८३ **रुचिरांगदः**- सुन्दर बाजूबंद धारण करने वाले।।६०।।

जननो जनजन्मादिः प्रीतिमान्नीतिमान्धवः ।
वसिष्ठः कश्यपो भानुर्भीमो भीमपराक्रमः ।।६१।।

४८४ **जननः** प्राणिमात्र को जन्म देने वाले, ४८५ **जनजन्मादिः**- जन्म लेने वालों के जन्म के मूल कारण, ४८६ **प्रीतिमान्**-प्रसन्न, ४८७ **नीतिमान्**- सदा नीतिपरायण, ४८८ **धवः**- सबके स्वामी,' ४८९ **वसिष्ठः**- मन और इन्द्रियों को अत्यन्त वश में रखने वाले अथवा वशिष्ट ऋषिरूप, ४९० **कश्यपः**-द्रष्टा अथवा कश्यप मुनिरूप, ४९१ **भानुः**- प्रकाशमान अथवा सूर्यरूप, ४९२ **भीमः**- दुष्टों को भय देने वाले, ४९३ **भीमपराक्रमः**- अतिशय भयदायक पराक्रम से युक्त।।६१।।

प्रणवः सत्पथाचारी महाकोशो महाधनः ।
जन्माधिपो महादेवः सकलागमपारगः ।।६२।।

४९४ **प्रणवः**- ओंकार स्वरूप, ४९५ **सत्पथाचारः**- सत्पुरुषों के मार्ग पर चलने वाले, ४९६ **महाकोशः**- अन्नमयादि पाँचों कोशों को

अपने भीतर धारण करने के कारण महाकोशरूप, ४९७ **महाधनः**- अपरिमित ऐश्वर्य वाले अथवा कुबेर को भी धन देने के कारण महाधनवान्, ४९८ **जन्माधिपः**- जन्म (उत्पादन) रूपी कार्य के अध्यक्ष ब्रह्मा, ४९९ **महादेवः**- सर्वोत्कृष्ट देवता, ५०० **सकलागमपारगः**- समस्त शास्त्रों के पारंगत विद्धान ।।६२।।

तत्वं तत्वविदेकात्मा विभुर्विश्वविभूषणः ।
ऋषिर्ब्राहमण ऐश्वर्यजनममृत्युजरातिगः ।।६३।।

५०१ **तत्वम्**- यथार्थ तत्वरूप, ५०२ **तत्ववित्**- यथार्थ तत्व को पूर्णतया जानने वाले, ५०३ **एकात्मा**- अद्वितीय आत्मरूप, ५०४ **विभुः**- सर्वत्र व्यापक, ५०५ **विश्वभूषणः**- सम्पूर्ण जगत् को उत्तम गुणों से विभूषित करने वाले, ५०६ **ऋषिः**- मन्त्रद्रष्टा, ५०७ **ब्राह्मणः**- ब्रह्मवेता, ५०८ **ऐश्वर्यजन्ममृत्यु जरोतगः**- ऐश्वर्य, जन्म, मृत्यु और जरा से अतीत ।।६३।।

पञ्चयज्ञसमुत्पत्तिर्विश्वेशो विमलोदयः ।
आत्मयोनिरनाद्यन्तो वत्सलो भक्तलोकधृक् ।।६४।।

५०९ **पञ्चयज्ञसमुत्पत्तिः**- पञ्च महायज्ञों की उत्पत्ति के हेतु, ५१० **विश्वेशः**- विश्वनाथ, ५११ **विमलोदयः**- निर्मल अभ्युदय की प्राप्ति कराने वाले धर्मरूप, ५१२ **आत्मयोनिः**- स्वयम्भू, ५१३ **अनाद्यन्तः**- आदि-अन्त से रहित, ५१४ **वत्सलः**- भक्तों के प्रति वात्सल्य-स्नेह से युक्त, ५१५ **भक्तलोकधृक्**-भक्तजनों के आश्रय ।।६४।।

गायत्रीवल्लभः प्रांशुर्विश्वावासः प्रभाकरः ।
शिशुगिरिरतः सम्राट् सुषेणः सुरशत्रुहा ।।६५।।

५१६ **गायत्रीवल्लभः**- गायत्री मन्त्र के प्रेमी, ५१७ **प्रांशुः**- ऊँचे शरीर वाले, ५१८ **विश्वावासः**- सम्पूर्ण जगत् के आवासस्थान, ५१९ **प्रभाकरः**- सूर्यरूप, ५२० **शिशुः**- बालकरूप, ५२१ **गिरिरतः**- कैलाश पर्वत पर रमण करने वाले, ५२२ **सम्राट्**- देवेश्वरों के भी ईश्वर, ५२३ **सुषेणः सुरशत्रुहा**-प्रमथगणों की सुन्दर सेना से युक्त तथा देवशत्रुओं का संहार करने वाले।।६५।।

अमोघोअरिष्टनेमिश्च कुमुदो विगतज्वरः ।
स्वयंज्योतिस्तनुज्योतिरात्मज्योतिरचञ्चलः ।।६६।।

५२४ **अमोघोअरिष्टनेमिः**- अमोघ संकल्प वाले महर्षि कश्यप रूप, ५२५ **कुमुदः**- भूतल को आह्लाद प्रदान करने वाले चन्द्रमारूप, ५२६ **विगतज्वरः**- चिन्तारहित, ५२७ **स्वयंज्योतिस्तनुज्योतिः**- अपने ही प्रकाश से प्रकाशित होने वाले सूक्ष्मज्योतिः स्वरूप, ५२८ **आत्मज्योतिः**- अपने स्वरूप भूत ज्ञान की प्रभा से प्रकाशित, ५२९ **अचञ्चलः**- चञ्चलता से रहित।।६६।।

पिंगल :कपिलश्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीतनुः ।
ज्ञानस्कन्दो महानीतिर्विश्वोत्पत्तिरुपप्लवः ।।६७।।

५३० **पिंगलः**- पिंगल वर्ण वाले, ५३१ **कपिलश्म**- कपिल वर्ण की दाढ़ी-मूँछ रखने वाले दुर्वासा मुनि के रूप में अवतीर्ण, ५३२ **भालनेत्रः**- ललाट में तृतीय नेत्र धारण करने वाले, ५३३ **त्रयीतनुः**- तीनों लोक या तीनों वेद जिनके स्वरूप हैं, ऐसे ५३४ **ज्ञानस्कन्दो महानीतिः**- ज्ञानप्रद और श्रेष्ठ नीतिवाले, ५३५ **विश्वोत्पत्तिः**- जगत् के उत्पादक, ५३६ **उपप्लवः**- संहारकारी ।।६७।।

भगोविवस्वानादित्यो योगपारो दिवस्पतिः।
कल्याणगुणनामा च पापहा पुण्यदर्शनः ।।६८।।

५३७ **भगो विवस्वानादित्यः**- अदितिनन्दन भग एवं विवस्वान्, ५३८ **योगपारः**- योगविद्या में पारंगत, ५३९ **दिवस्पतिः**- स्वर्गलोक के स्वामी, ५४० **कल्याणगुणनामा**-कल्याणकारी गुण और नाम वाले, पापहा- पापनाशक, ५४२ **पुण्यदर्शनः**- पुण्यजनक दर्शन वाले अथवा पुण्य से ही जिनका दर्शन होता है, ऐसे ।।६८।।

उदारकीर्तिरुद्योगी सद्योगी सदसन्मयः ।
नक्षत्रमाली नाकेशः स्वाधिष्ठानपदाश्रयः ।।६९।।

५४३ **उदारकीर्तिः**- उत्तम कीर्ति वाले, ५४४ **उद्योगी**- उद्योगशील, ५४५ **सद्योगी**-श्रेष्ठ योगी, ५४६ **सदसन्मयः**- सदसत्स्वरूप, ५४७ **नक्षत्रमाली**-नक्षत्रों की माला से अलंकृत आकाशरूप, ५४८ **नाकेशः**- स्वर्ग के स्वामी, ५४९ **स्वाधिष्ठान-पदाश्रयः**-स्वाधिष्ठान चक्र के आश्रय ।।६९।।

पवित्रः पापहारी च मणिपूरो नभोगतिः ।
हृत्पुण्डरीकमासीनः शक्रःशान्तो वृषाकपिः ।।७०।।

५५० पवित्रः पापहारी-नित्य शुद्ध एवं पापनाशक, ५५१ मणिपूरः- मणिपूर नामक चक्रस्वरू, ५५२ नभोगतिः- आकाशचारी, ५५३ हृत्पुण्डरी कमासीनः- हृदयकमल में स्थित, ५५४ शक्रः- इन्द्र रूप, ५५५ शान्तः- शान्तस्वरूप, ५५६ वृषाकपिः- हरिहर। ।७०।

ऊष्णो गृहपति कृष्णः समर्थोअनर्थनाशनः ।
अधर्मशत्रुरज्ञेयः पुरुहूतः पुरुश्रुतः ।।७१।।

५५७ उष्णः- हालाहल विष की गर्मी से ऊष्णतायुक्त, ५५८ गृहपतिः- समस्त ब्रह्माण्ड रूपी गृह के स्वामी, ५५९ कृष्णः- सच्चिदानन्द स्वरूप, ५६० समर्थः- सामर्थ्यशाली, ५६१ अनर्थनाशनः- अनर्थ का नाश करने वाले, ५६२ अधर्मशत्रुः- अधर्म-नाशक, ५६३ अज्ञेयः- बुद्धि की पहुँच से परे अथवा जानने में न आने वाले, ५६४ पुरुहूतः पुरुश्रुतः- बहुत से नामों द्वारा पुकारे और सुने जाने वाले। ।७१।।

ब्रह्मगर्भो बृहदगर्भो धर्मधेनुर्धनागमः ।
जगद्धितैषी सुगतः कुमारः कुशलागमः ।।७२।।

५६५ ब्रह्मगर्भः- ब्रह्मा जिनके गर्भस्थ शिशु के समान हैं, ऐसे, ५६६ बृहद्गर्भः- विश्वब्रह्माण्ड प्रलयकाल में जिनके गर्भ में रहता

है ऐसे, ५६७ **धर्मधेनुः**- धर्मरूपी वृषभ को उत्पन्न करने के लिये धेनुस्वरूप, ५६८ **धनागमः**- धन की प्राप्ति कराने वाले, ५६९ **जगद्धितैषी**-समस्त संसार का हित चाहने वाले, ५७० **सुगतः**- उत्तम ज्ञान से सम्पन्न अथवा बुद्धस्वरूप, ५७१ **कुमारः**- कार्तिकेयरूप, ५७२ **कुशलागमः**- कल्याणदाता ।।७२।।

हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान्नानाभूतरतो ध्वनिः ।
अरागो नयनाध्यक्षो विश्वामित्रो धनेश्वरः ।।७३।।

५७३ **हिरण्यवर्णः ज्योतिष्मान्**-सुवर्ण के समान गौर वर्ण वाले तथा तेजस्वी, ५७४ **नानाभूतरतः**- नाना प्रकार के भूतों के साथ क्रीडा करने वाले, ५७५ **ध्वनिः**- नादस्वरूप, ५७६ **अरागः**- आसक्तिशून्य, ५७७ **नयनाध्यक्षः**- नेत्रों में दृष्टारूप से विद्यमान, ५७८ **विश्वामित्रः**- सम्पूर्ण जगत् के प्रति मैत्री भावना रखने वाले मुनि स्वरूप, ५७९ **धनेश्वरः**- धन के स्वामी कुबेर ।।७३।।

ब्रह्मज्योतिर्वसुधामा महाज्योतिरनुत्तमः ।
मातामहो मातरिश्वा नभस्वान्नागहारधृक् ।।७४।।

५८० **ब्रह्मज्योतिः**- ज्योतिः स्वरूप ब्रह्म, ५८१ **वसुधामा**-सुवर्ण और रत्नों के तेज से प्रकाशित अथवा वसुधास्वरूप, ५८२ **महाज्योतिरनुत्तमः**- सूर्य आदि ज्योतियों के प्रकाशक सर्वोत्तम महाज्योतिः स्वरूप, ५८३ **मातामहः**- मातृकाओं के जन्मदाता होने के कारण मातामंह, ५८४ **मातरिश्वा नभस्वान्**- आकाश में विचरने वाले वायुदेव, ५८५ **नागहारधृक्**-सर्पमय हार धारण करने वाले ।।७४।।

पुलस्त्यः पुलहोअगस्त्यो जातूकर्ण्यः पराशरः ।
निरावरणनिर्वारो वैरञ्च्यो विष्टरश्रवाः ।।७५।।

५८६ **पुलस्त्यः**- पुलस्त्य नामक मुनि, ५८७ **पुलहः**- पुलह नामक ऋषि, ५८८ **अगस्त्यः**- कुम्भ जन्मा अगस्त्य ऋषि, ५८९ **जातूकर्ण्यः**- इसी नाम से प्रसिद्ध मुनि, ५९० **पराशरः**- शक्ति के पुत्र तथा व्यासजी के पिता मुनिवर पराशर, ५९१ **निरावरणनिर्वारः**- आवरणशून्य तथा अवरोधरहित, ५९२ **वैरञ्च्यः**- ब्रह्माजी के पुत्र नीललोहित रुद्र, ५९३ **विष्टरश्रवाः**- विस्तृत यशवाले विष्णुस्वरूप ।।७५।।

आत्मभूरिनिरुद्धोअत्रिर्ज्ञानमूर्तिर्महायशाः ।
लोकवीराग्रणीर्वीरश्चण्डः सत्यपराक्रमः ।।७६।।

५९४ **आत्मभूः**- स्वयम्भू ब्रह्मा, ५९५ **अनिरुद्धः**- अकुण्ठित गति वाले, ५९६ **अत्रिः**- अत्रि नामक ऋषि, अथवा त्रिगुणातीत, ५९७ **ज्ञानमूर्तिः**- ज्ञानस्वरूप, ५९८ **महायशाः**- महायशस्वी, ५९९ **लोकवीराग्रणीः**- विश्वविख्यात वीरों में अग्रगण्य, ६०० **वीरः**- शूरवीर, ६०१ **चण्डः**- प्रलय के समय अत्यन्त क्रोध करने वाले, ६०२ **सत्यपराक्रमः**- सच्चे पराक्रमी ।।७६।।

व्यालाकल्पो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः ।
अलंकरिष्णुचरचलो रोचिष्णुर्विक्रमोन्नतः ।।७७।।

६०३ **व्यालाकल्पः**- सर्पों के आभूषण से श्रृंगार करने वाले, ६०४ **महाकल्पः**- महाकल्पसंज्ञक कालस्वरूप वाले, ६०५ **कल्पवृक्षः**-

शरणागतों की इच्छा पूर्ण करने के लिये कल्पवृक्ष के समान उदार, **६०६ कलाधरः**- चन्द्रकलाधारी, **६०७ अलंकरिष्णुः**- अलंकार धारण करने या कराने वाले, **६०८ अचलः**- विचलित न होने वाले, **६०९ रोचिष्णुः**- प्रकाशमान, **६१० विक्रमो नतः**- पराक्रम से बढ़े-चढ़े। ।७७।।

आयुः शब्दपतिर्वेगी प्लवनः शिखिसारथिः ।
असंसृष्टोअतिथिः शक्रप्रमाथी पादपासनः ।।७८।।

६११ आयुः शब्दपतिः- आयु तथा वाणी के स्वामी, **६१२ वेगी प्लवनः**- वेगशाली तथा कूदने या तैरने वाले, **६१३ शिखिसारथिः**- अग्निरूप सहायक वाले, **६१४ असंसृष्टाः**- निर्लेप, **६१५ अतिथिः**- प्रेमी भक्तों के घर पर अतिथि की भाँति उपस्थित हो उनका सत्कार ग्रहण करने वाले, **६१६ शक्रप्रमाथी**-इन्द्र का मानमर्दन करने वाले, **६१७ पादपासनः**- वृक्षों पर या वृक्षों के नीचे आसन लगाने वाले। ।७८।।

वसुश्रवा हव्यवाहः प्रतप्तो विश्वभोजनः ।
जप्यो जरादिशमनो लोहितात्मा तनूनपात् ।।७९।।

६१८ वसुश्रवाः- यशरूपी धन से सम्पन्न, **६१९ हव्यावाहः**- अग्निस्वरूप, **६२० प्रतप्तः**- सूर्यरूप से प्रचण्ड ताप देने वाले, **६२१ विश्वभोजनः**- प्रलयकाल में विश्व-ब्रह्माण्ड को अपना ग्रास बना लेने वाले, **६२२ जप्यः**- जपने योग्य नाम वाले, **६२३ जरादिशमनः**-

बुढ़ापा आदि दोषों का निवारण करने वाले, ६२४ **लोहितात्मा तनूनपात्**- लोहित वर्ण वाले अग्निरूप ।।

बृहदश्वो नभोयोनिः सुप्रतीकस्तमिस्रहा ।
निदाघस्तपनो मेघः स्वक्षः परपुरंजयः ।।८०।।

६२५ **बृहदश्वः**- विशाल अश्व वाले, ६२६ **नभोयोनिः**- आकाश की उत्पत्ति के स्थान, ६२७ **सुप्रतीकः**- सुन्दर शरीर वाले, ६२८ **तमिस्रहा**- अज्ञानान्धकारनाशक, ६२९ **निदाघस्तपनः**- तपने वाले ग्रीष्मरूप, ६३० **मेघः**- बादलों से उपलक्षित वर्षारूप, ६३१ **स्वक्षः**- सुन्दर नेत्रों वाले, ६३२ **परपुरंजयः**- त्रिपुररूप शत्रु नगरी पर विजय पाने वाले ।।८०।

सुखानिलः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः ।
वसन्तो माधवो ग्रीष्मो नभस्यो बीजवाहनः ।।८१।।

६३३ **सुखानिलः**- सुखदायक वायु को प्रकट करने वाले शरत्कालरूप, ६३४ **सुनिष्पन्नः**- जिसमें अन्न का सुन्दर रूप से परिपाक होता है, वह हेमन्तकालरूप, ६३५ **सुरभिः शिशिरात्मकः**- सुगन्धित मलयानिल से युक्त शिशिर ऋतुरूप, ६३६ **वसन्तः माधवः**- चैत्र-वैशाख- इन दो मासों से युक्त, वसन्तरूप, ६३७ **ग्रीष्मः**- ग्रीष्म ऋतुरूप, ६३८ **नभस्यः**- भाद्र पदमासरूप, ६३९ **बीजवाहनः**- धान आदि के बीजों की प्राप्ति कराने वाला शरत्काल ।।८१।।

अंगिरा गुरुरात्रेयो विमलो विश्ववाहनः ।
पावनः सुमतिर्विद्वांस्त्रैविद्यो वरवाहनः ।।८२।।

६४० **अंगिरा गुरुः**- अंगिरा नामक ऋषि तथा उनके पुत्र देवगुरु बृहस्पति, ६४१ **आत्रेयः**- अत्रिकुमार दुर्वासा, ६४२ **विमलः**- निर्मल, ६४३ **विश्ववाहनः**- सम्पूर्ण जगत् का निर्वाह कराने वाले, ६४४ **पावनः**- पवित्र करने वाले, ६४५ **सुमतिर्विद्वान्**-उत्तम बुद्धिवाले विद्वान्, ६४६ **त्रैविद्यः**- तीनों वेदों के विद्वान् अथवा तीनों वेदों के द्वारा प्रतिपादित, ६४७ **वरवाहनः**- वृषभरूप श्रेष्ठ वाहन वाले।।८२।।

मनोबुद्धिरहंकारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः ।
जमदग्निर्बलनिधिर्विगालो विश्वगालवः ।।८३।।

६४८ **मनोबुद्धिरहंकारः**- मन, बुद्धि और अहंकार स्वरूप, ६४९ **क्षेत्रज्ञः**- आत्मा, ६५० **क्षेत्रपालकः**- शरीररूपी क्षेत्र का पालन करने वाले परमात्मा, ६५१ **जमदग्निः**- जमदग्नि नाम ऋषिरूप, ६५२ **बलनिधिः**- अनन्त बल के सागर, ६५३ **विगालः**- अपनी जटा से गंगाजी के जल को टपकाने वाले, ६५४ **विश्वगालवः**- विश्वविख्यात गालब मुनि अथवा प्रलयकाल में कालाग्निस्वरूप से जगत् को निगल जाने वाले।।८३।।

अघोरोअनुत्तरो यज्ञः श्रेष्ठो निःश्रेयसप्रदः ।
शैलो गगनकुन्दाभो दानवारिअरिंदमः ।।८४।।

६५५ **अघोरः**- सौम्यरूप वाले, ६५६ **अनुत्तरः**- सर्वश्रेष्ठ, ६५७ **यज्ञः श्रेष्ठः**- श्रेष्ठः यज्ञरूप, ६५८ **निःश्रेयसप्रदः**- कल्याणदाता, ६५९ **शैलः**- शिलामय लिंगरूप, ६६० **गगनकुन्दाभः**- आकाशकुन्द-चंद्रमा के समान गौर कान्ति वाले, ६६१ **दानवारिः**- दानव-शत्रु, ६६२ **अरिंदमः**- शत्रुओं का दमन करने वाले।।८४।।

रजनीजनकश्चारुर्निःशल्यो लोकशल्यधृक्।
चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरश्चतुरप्रियः ।।८५।।

६६३ **रजनीजनकश्चारुः**- सुन्दर निशाकर रूप, ६६४ **निःशल्यः**- निष्कण्टक, ६६५ **लोकशल्यधृक्**- शरणागत जनों के शोकशल्य को निकाल कर स्वयं धारण करने वाले, ६६६ **चतुर्वेदः**- चारों वेदों के द्वारा जानने योग्य, ६६७ **चतुर्भावः**- चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति कराने वाले, ६६८ **चतुरश्चतुरप्रियः**- चतुर एवं चतुर पुरुषों के प्रिय।।८५।।

आम्नायोअथ समाम्नायस्तीर्थदेवशिवालयः ।
बहुरूपो महारूपः सर्वरूपश्चराचरः ।।८६।।

६६९ **आम्नायः**- वेदस्वरूप, ६७० **सामाम्नायः**-अक्षरसमाम्नाय-शिवसूत्ररूप, ६७१ **तीर्थदेवशिवालयः**- तीर्थों के देवता और शिवालय रूप, ६७२ **बहुरूपः**- अनेक रूप वाले, ६७३ **महारूपः**- विराट्रूपं धारी, ६७४ **सर्वरूपश्चराचरः**- चर और अचर सम्पूर्ण रूप वाले।।८६।।

न्यायनिर्मायको न्यायी न्यायगम्यो निरञ्जनः ।
सहस्रमूर्द्धा देवेन्द्रः सर्वशस्त्रप्रभञ्जनः ।।८७।।

६७५ **न्यायनिर्मायको न्यायी**-न्यायकर्ता तथा न्यायशील, ६७६ **न्यायगम्यः**- न्याययुक्त आचरण से प्राप्त होने योग्य, ६७७ **निरञ्जनः**- निर्मल, ६७८ **सहस्रमूर्द्धा**-सहस्रों सिर वाले, ६७९ **देवेन्द्रः**- देवताओं के स्वामी, ६८० **सर्वशस्त्रप्रभञ्जनः**- विपक्षी योद्धाओं के सम्पूर्ण शस्त्रों को नष्ट कर देने वाले ।।८७।।

मुण्डो विरूपो विक्रान्तो दण्डी दान्तो गुणोत्तमः ।
पिंगलाक्षो जनाध्यक्षो नीलग्रीवो निरामयः ।।८८।।

६८१ **मुण्डः**- मुँड़े हुए सिर वाले सन्यासी, ६८२ **विरूपः**- बिविध रूप वाले, ६८३ **विक्रान्तः**- विक्रमशील, ६८४ **दण्डी**- दण्डधारी, ६८५ **दान्तः**- मन और इन्द्रियों का दमन करने वाले, ६८६ **गुणोत्तमः**- गुणों में सबसे श्रेष्ठ, ६८७ **पिंगलाक्षः**- पिंगल नेत्र वाले, ६८८ **जनाध्यक्षः**- जीवमात्र के साक्षी, ६८९ **नीलग्रीवः**- नीलकण्ठ, ६९० **निरामयः**- निरोग ।।८८।।

सहस्रबाहुः सर्वेश शरण्यः सर्वलोकधृक् ।
पद्मासनः परं ज्योतिः परारम्पर्य्यफलप्रदः ।।८९।।

६९१ **सहस्रबाहुः**- सहस्रों भुजाओं से युक्त, ६९२ **सर्वेशः**- सबके स्वामी, ६९३ **शरण्यः**- शरणागत हितैषी, ६९४ **सर्वलोकधृक्**-सम्पूर्ण

लोकों को धारण करने वाले, ६९५ **पद्मासनः**- कमल के आसन पर विराजमान, ६९६ **परं ज्योतिः**- परम प्रकाशस्वरूप, ६९७ **पारम्पर्य्यफलप्रदः**- परम्परागत फल की प्राप्ति कराने वाले ।।८६।।

पद्मगर्भो महागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः ।
परावरज्ञो वरदो वरेण्यश्य महास्वनः ।।९०।।

६९८ **पद्मगर्भः**- अपनी नाभि से कमल को प्रकट करने वाले विष्णुरूप, ६९९ **महागर्भः**- विराट ब्रह्माण्ड को गर्भ में धारण करने के कारण महान् गर्भ वाले, ७०० **विश्वगर्भः**- सम्पूर्ण जगत् को अपने उदर में धारण करने वाले, ७०१ **विचक्षणः**- चतुर, ७०२ **परावरज्ञः**- कारण और कार्य के ज्ञाता, ७०३ **वरदः**- अभीष्ट वर देने वाले, ७०४ **वरेण्यः**- वरणीय अथवा श्रेष्ठ, ७०५ **महास्वनः**- डमरू का गम्भीर नाद करने वाले ।।९०।।

देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः ।
देवासुरमहामित्रो देवासुरमहेश्वरः ।।९१।।

७०६ **देवासुरगुरुर्देवः**- देवताओं तथा असुरों के गुरुदेव एवं आराध्य, ७०७ **देवासुरनमस्कृतः**- देवताओं तथा असुरों से वन्दित, ७०८ **देवासुरमहामित्रः**- देवता तथा असुर दोनों के बड़े मित्र, ७०९ **देवसुरमहेश्वरः**- देवताओं और असुरों के महान् ईश्वर ।।९१।।

देवासुरेश्वरो दिव्यो देवासुरमहाश्रयः ।
देवदेवमयोअचिन्त्यो देवदेवात्मसम्भवः ।।६२।।

७१० देवासुरेश्वरः- देवताओं और असुरों के शासक, **७११ दिव्यः**- अलौकिक स्वरूप वाले, **७१२ देवासुरमहाश्रयः**- देवताओं और असुरों के महान् आश्रय, **७१३ देवदेवमयः**- देवताओं के लिये भी देवता रूप, **७१४ अचिन्त्यः**- चित्त की सीमा से परे विद्यमान, **७१५ देवदेवात्मसम्भवः**- देवाधिदेव ब्रह्माजी से रुद्र रूप में उत्पन्न ।।६२।।

सद्योनिरसुरव्याघ्रो देवसिंहो दिवाकरः ।
विबुधाग्रचरश्रेष्ठः सर्वदेवोत्तमोत्तमः ।।६३।।

७१६ सद्योनिः- सत्य पदार्थों की उत्पत्ति के हेतु, **७१७ असुरव्याघ्रः**- असुरों का विनाश करने के लिये व्याघ्ररूप, **७१८ देवसिंहः**- देवताओं में श्रेष्ठ, **७१९ दिवाकरः**- सूर्यरूप, **७२० विबुधाग्रचरश्रेष्ठः**- देवताओं के नायकों में सर्वश्रेष्ठ, **७२१ सर्वदेवोत्तमोत्तमः**- सम्पूर्ण श्रेष्ठ देवताओं के भी शिरोमणि ।।६३।।

शिवज्ञानरतः श्रीमच्छिखिश्रीपर्वतप्रियः ।
वज्रहस्तः सिद्धखंगो नरसिंहनिपातनः ।।६४।।

७२२ शिवज्ञानरतः- कल्याणमय शिवतत्व के विचार में तत्पर, **७२३ श्रीमान्**- अणिमा आदि विभूतियों से सम्पन्न, **७२४**

शिखिश्रीपर्वतप्रियः- कुमार कार्तिकेय के निवासभूत श्रीशैल नामक पर्वत से प्रेम करने वाले, **७२५ वज्रहस्तः**- वज्रधारी इन्द्ररूप, **७२६ सिद्धखंगः**- शत्रुओं को मार गिराने में जिनकी तलवार कभी असफल नहीं होती, ऐसे, **७२७ नरसिंहनिपातनः**- शरभरूप से नृसिंह को धराशायी करने वाले ।।६४।।

ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः ।
नन्दी नन्दीश्वरोअनन्तो नग्नव्रतधरः शुचिः।।६५।।

७२८ ब्रह्मचारी-भगवती उमा के प्रेम की परीक्षा लेने के लिये ब्रह्मचारी रूप से प्रकट, **७२९ लोकचारी**-समस्त लोकों में विचरने वाले, **७३० धर्मचारी**-धर्म का आचरण करने वाले, **७३१ धनाधिपः**- धन के अधिपति कुबेर, **७३२ नन्दीश्वरः**- इसी नाम से प्रसिद्ध वृषभ, **७३४ अनन्तः**- अनन्तरहित, **७३५ नग्नव्रतधरः**- दिगम्बर रहने का व्रत धारण करने वाले, **७३६ शुचिः**- नित्य शुद्ध ।।६५।।

लिंगाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः।
स्वधर्मा स्वर्गतः स्वर्गस्वरः स्वरमयस्वनः ।।६६।।

७३७ लिंगाध्यक्षः- लिंगदेह के द्रष्टा, **७३८ सुराध्यक्षः**- देवताओं के अधिपति, **७३९ योगाध्यक्षः**- योगेश्वर, **७४० युगावहः**- युग के निर्वाहक, **७४१ स्वधर्मा**- आत्मविचार रूप धर्म से स्थित अथवा स्वधर्मपरायण, **७४२ स्वर्गतः**- स्वर्गलोक में स्थित, **७४३ स्वर्गस्वरः**-

स्वर्गलोक में जिनके यश का गान किया जाता है, ऐसे, ७४४ **स्वरभयस्वनः**- सात प्रकार के स्वरों से युक्त ध्वनि वाले।।९६।।

बाणाध्यक्षो बीजकर्ता धर्मकृद्धर्मसम्भवः ।
दम्भोअलोभोअर्थविच्छम्भुः सर्वभूतमहेश्वरः।। ९७।।

७४५ **बाणाध्यक्षः**- बाणासुर के स्वामी अथवा बाणलिंग नर्मदेश्वर में अधिदेवता रूप से स्थित, ७४६ **बीजकर्ता**-बीज के उत्पादक, ७४७ **धर्मकृद्धर्मसम्भवः**- धर्म के पालक और उत्पादक, ७४८ **दम्भः**- मायामयरूप धारी, ७४९ **अलोभः**- लोभरहित, ७५० **अर्थविच्छम्भुः**- सबके प्रयोजन को जानने वाले कल्याण निकेतन शिव, ७५१ **सर्वभूतमहेश्वरः**- सम्पूर्ण प्राणियों के परमेश्वर।।९७।।

श्मशाननिलयस्>यक्षः सेतुरप्रतिमाकृतिः ।
लाकोत्तरस्फुटालोकस्>यम्बको नागभूषणः।। ९८।।

७५२ **श्मशाननिलयः**- श्मशान वासी, ७५३ **>यक्षः**- त्रिनेत्र धारी, ७५४ **सेतुः**- धर्म मर्यादा के पालक, ७५५ **अप्रतिमाकृतिः**- अनुपम रूप वाले, ७५६ **लोकोत्तरस्फुटालोकः**- अलौकिक एवं सुस्पष्ट प्रकाश से युक्त, ७५७ **>यम्बकः**- त्रिनेत्रधारी अथवा >यम्बक नामक ज्योतिर्लिंग, ७५८ **नागभूषणः**- नागहार से विभूषित।।९८।।

अन्धकारिर्मखद्वेषी विष्णुकन्धरपातनः ।
हीनदोषोअक्षयगुणो दक्षारिः पूषदन्तभित् ।। ९९।।

७५९ **अन्धकारिः**- अन्धकासुर का वध करने वाले, ७६० **मखद्वेषी**-दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करने वाले, ७६१ **विष्णु-कन्धरपातनः**- यज्ञमय विष्णु का गला काटने वाले, ७६२ **हीनदोषः**- दोष रहित, ७६३ **अक्षयगुणः**- अविनाशी गुणों से सम्पन्न, ७६४ **दक्षारिः**- दक्षद्रोही, ७६५ **पूषदन्तभित्**- पूषा देवता के दाँत तोड़ने वाले।।९९।।

धूर्जटिः खण्डपरशुः सकलो निष्कलोअनघः ।
अकालः सकलाधारः पाण्डुराभो मृडो नटः ।।१००।।

७६६ **धूर्जटिः**- जटा के भार से विभूषित, ७६७ **खण्डपरशुः**- खण्डित परशु वाले, ७६८ **सकलो निष्कलः**- साकार एवं निराकार परमात्मा, ७६९ **अनघः**- पाप के स्पर्श से शून्य, ७७० **अकालः**- काल के प्रभाव से रहित, ७७१ **सकलाधारः**- सबके आधार, ७७२ **पाण्डुराभः**- श्वेत कान्तिवाले, ७७३ **मृडो नटः**- सुखदायक एवं ताण्डवनृत्यकारी।।१००।।

पूर्णः पूरयिता पुण्यः सुकुमारः सुलोचनः ।
सामगेयप्रियोअक्रूरः पुण्यकीर्तिरनामयः ।।१०१।।

७७४ **पूर्णः**- सर्वव्यापी परब्रह्म परमात्मा, ७७५ **पूरयिता**- भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करने वाले, ७७६ **पुण्यः**- परम पवित्र, ७७७ **सुकुमारः**- सुन्दर कुमार हैं जिनके ऐसे, ७७८ **सुलोचनः**- सुन्दर नेत्र

वाले, ७७९ **सामगेयप्रियः**- सामगान के प्रेमी, ७८० **अक्रूरः**- क्रूरतारहित, ७८१ **पुण्यकीर्तिः**- पवित्र कीर्ति वाले, ७८२ **अनामयः**- रोग-शोक से रहित ।।१०१।

मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो जीवितेश्वरः ।
जीवितान्तकरो नित्यो वसुरेता वसुप्रदः ।।१०२।।

७८३ **मनोजवः**- मन के समान वेगशाली, ७८४ **तीर्थकरः**- तीर्थों के निर्माता, ७८५ **जटिलः**- जटाधारी, ७८६ **जीवितेश्वरः**- सबके प्राणेश्वर, ७८७ **जीवितान्तकरः**- प्रलयकाल में सबके जीवन का अन्त करने वाले, ७८८ **नित्यः**- सनातन, ७८९ **वसुरेताः**- सुवर्णमय वीर्य वाले, ७९० **वसुप्रदः**- धनदाता ।।१०२।।

सद्गतिः सत्कृतिः सिद्धिः सज्जातिः खलकण्टकः ।
कलाधरो महाकालभूतः सत्यपरायणः ।।१०३।।

७९१ **सद्गतिः**- सत्पुरुषों के आश्रय, ७९२ **सत्कृतिः**- शुभ कर्म करने वाले, ७९३ **सिद्धिः**- सिद्धि स्वरूप, ७८४ **सज्जातिः**- सत्पुरूषों के जन्मदाता, ७९५ **खलकण्टकः**- दुष्टों के लिए कण्टक रूप, ७९६ **कलाधरः**- कलाधारी, ७९७ **महाकालभूतः**- महाकाल नामक ज्योतिर्लिंग स्वरूप अथवा काल के भी काल होने से महाकाल, ७९८ **सत्यपरायणः**- सत्यनिष्ठ ।।१०३।।

लोकलावण्यकर्ता च लोकोत्तरसुखालयः ।
चन्द्रसंजीवनः शास्ता लोकगूढो महाधिपः ।।१०४।।

७९९ **लोकलावण्यकर्ता**- सब लोगों को सौन्दर्य प्रदान करने वाले, ८०० **लोकोत्तरसुखालयः**- लोकोत्तर सुख के आश्रय, ८०१ **चन्द्रसंजीवनः शास्ता**- सोमनाथ रूप से चन्द्रमा को जीवन प्रदान करने वाले सर्वशासक शिव, ८०२ **लोकगूढ़ः**- समस्त संसार में अव्यक्त रूप से व्यापक, ८०३ **महाधिपः**- महेश्वर।।१०४।।

लोकबन्धुर्लोकनाथः कृतज्ञः कीर्तिभूषणः ।
अनपायोअक्षरः कान्तः सर्वशस्त्रभृतां वरः।।१०५।।

८०४ **लोकबन्धुर्लोकनाथः**- सम्पूर्ण लोकों के बन्धु एवं रक्षक, ८०५ **कृतज्ञः**- उपकार को मानने वाले, ८०६ **कीर्तिभूषणः**- उत्तम यश से विभूषित, ८०७ **अनपायोअक्षरः**- विनाशरहित-अविनाशी, ८०८ **कान्तः**- प्रजापति दक्ष का अन्त करने वाले, ८०९ **सर्वशस्त्रभृतां वरः**- सम्पूर्ण शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ।।

तेजोमयो द्युतिधरो लोकानामग्रणीरणुः ।
शुचिस्मितः प्रसन्नात्मा दुर्जेयो दुरतिक्रमः ।।१०६।।

८१० **तेजोमयो द्युतिधरः**- तेजस्वी और कान्तिमान्, ८११ **लोकानामग्रणीः**- सम्पूर्ण जगत् के लिये अग्रगण्य देवता अथवा जगत् को आगे बढ़ाने वाले, ८१२ **अणुः**- अत्यन्त सूक्ष्म, ८१३ **शुचिस्मितः**- पवित्र मुस्कान वाले, ८१४ **प्रसन्नात्मा**-हर्ष भरे हृदय वाले, ८१५ **दुर्जेयः**- जिन पर विजय पाना अत्यन्त कठिन है, ऐसे, ८१६ **दुरतिक्रमः**- दुर्लघय।।१०६।

ज्योतिर्मयो जगन्नाथो निराकारो जलेश्वरः ।
तुम्बवीणो महाकोपो विशोकः शोकनाशनः ।।१०७।।

८१७ **ज्योतिर्मयः**- तेजोमय, ८१८ **जगन्नाथः**- विश्वनाथ, ८१९ **निराकारः**- आकार रहित परमात्मा, ८२० **जलेश्वरः**- जल के स्वामी, ८२१ **तुम्बवीणः**- तूँबी की वीणा बजाने वाले, ८२२ **महाकोपः**- संहार के समय महान् क्रोध करने वाले, ८२३ **विशोकः**- शोक रहित, ८२४ **शोकनाशनः**- शोक का नाश करने वाले ।।१०७।।

त्रिलोकपस्त्रिलोकेशः सर्वशुद्धिरधोक्षजः ।
अव्यक्तलक्षणो देवो व्यक्ताव्यक्तो विशाम्पतिः।।१०८।।

८२५ **त्रिलोकपः**- तीनों लोकों का पालन करने वाले, ८२६ **त्रिलोकेशः**- त्रिभुवन के स्वामी, ८२७ **सर्वशुद्धिः**- सबकी शुद्धि करने वाले, ८२८ **अधोक्षजः**- इन्द्रियों और उनके विषयों से अतीत, ८२९ **अव्यक्तलक्षणो देवः**- अव्यक्त लक्षण वाले देवता, ८३० **व्यक्ताव्यक्तः**- स्थूल-सूक्ष्म रूप, ८३१ **विशाम्पतिः**- प्रजाओं के पालक ।।१०८।।

वरशीलो वरगुणः सारो मानधनो मयः ।
ब्रह्मा विष्णुः प्रजापालो हंसो हंसगतिर्वयः ।।१०९।।

८३२ **वरशीलः**- श्रेष्ठ स्वभाव वाले, ८३३ **वरगुणः**- उत्तम गुणों वाले, ८३४ **सारः**- सारतत्व, ८३५ **मानधनः**- स्वाभिमान के धनी,

८३६ मयः- सुखस्वरूप, ८३७ ब्रह्मा-सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, ८३८ विष्णुः प्रजापालः- प्रजापालक विष्णु, ८३९ हंसः- सूर्य स्वरूप, ८४० हंसगतिः- हंस के समान चाल वाले, ८४१ वयः- गरुड़ पक्षी ।।१०९।।

वेधा विधाता धाता च स्रष्टा हर्ता चतुर्मुखः ।
कैलासशिखरावासी सर्वावासी सदागतिः ।।११०।।

८४२ वेधा विधाता धाता- ब्रह्मा, धाता और विधाता नामक देवतास्वरूप, ८४३ स्रष्टा- सृष्टिकर्ता, ८४४ हर्ता-संहारकारी, ८४५ चतुर्मुखः- चार मुख वाले ब्रह्मा, ८४६ कैलासशिखरावासी-कैलास के शिखर पर निवास करने वाले, ८४७ सर्वावासी-सर्वव्यापी, ८४८ सदागतिः- निरन्तर गतिशील वायुदेवता।

हिरण्यगर्भो द्रुहिणो भूतपालाअथ भूपतिः ।
सद्योगी योगविद्योगी वरदो ब्राह्मणप्रियः ।।१११।।

८४९ हिरण्यगर्भः- ब्रह्मा, ८५० द्रुहिणः- ब्रह्मा, ८५१ भूतपालः- प्राणियों का पालन करने वाले, ८५२ भूपतिः- पृथ्वी के स्वामी, ८५३ सद्योगी- श्रेष्ठ योगी, ८५४ योगविद्योगी- योग-विद्या के ज्ञाता योगी, ८५५ वरदः- वर देने वाले, ८५६ ब्राह्मणप्रियः- ब्राह्मणों के प्रेमी।।१११।।

देवप्रियो देवनाथो देवज्ञो देवचिन्तकः ।
विषमाक्षो विशालाक्षो वृषदो वृषवर्धनः ।।११२।।

८५७ देवप्रियो देवनाथः- देवताओं के प्रिय तथा रक्षक, **८५८ देवज्ञः**- देवत्व के ज्ञाता, **८५९ देवचिन्तकः**- देवताओं का विचार करने वाले, **८६० विषमाक्षः**- विषम नेत्र वाले, **८६१ विशालाक्षः**- बड़े-बड़े नेत्र वाले, **८६२ वृषदोवृषवर्धनः**- धर्म का दान और वृद्धि करने वाले।।११२।।

निर्ममो निरहंकारो निर्मोहो निरुपद्रवः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तः सर्वर्तुपरिवर्तकः ।।११३।।

८६३ निर्ममः- ममता रहित, **८६४ निरहंकारः**- अहंकार शून्य, **८६५ निर्मोहः**- मोहशून्य, **८६६ निरुपद्रवः**- उपद्रव या उत्पात से दूर, **८६७ दर्पहा दर्पदः**- दर्प का हनन और खण्डन करने वाले, **८६८ दृप्तः**- स्वाभिमानी, **८६९ सर्वर्तुपरिवर्तकः**- समस्त ऋतुओं को बदलते रहने वाले।।११३।।

सहस्रजित् सहस्रार्चिः स्निग्धप्रकृतिदक्षिणः ।
भूतभव्यभवन्नाथः प्रभवो भूतिनाशनः ।।११४।।

८७० सहस्रजित्-सहस्रों पर विजय पाने वाले, **८७१ महस्रार्चिः**- सहस्रों किरणों से प्रकाशमान सूर्यरूप, **८७२ स्निग्धप्रकृतिदक्षिणः**- स्नेहयुक्त स्वभाव वाले तथा उदार, **८७३ भूतभव्यभवन्नाथः**- भूत, भविष्य और वर्तमान के स्वामी, **८७४ प्रभवः**- सबकी उत्पत्ति के कारण, **८७५ भूतिनाशनः**- दुष्टों के ऐश्वर्य का नाश करने वाले।।११४।।

अर्थोऽनर्थो महाकोशः परकार्यैकपण्डितः ।
निष्कण्टकः कृतानन्दो निर्व्याजो व्याजमर्दनः ।।११५।।

८७६ **अर्थः**- परम पुरूषार्थ रूप, ८७७ **अनर्थः**- प्रयोजन रहित, ८७८ **महाकोशः**- अनन्त धनराशि के स्वामी, ८७९ **परकार्यैकपण्डितः**- पराये कार्य को सिद्ध करने की कला के एकमात्र विद्वान्, ८८० **निष्कण्टकः**- कण्टकरहित, ८८१ **कृतानन्दः**- नित्यसिद्ध आनन्द स्वरूप, ८८२ **निर्व्याजो व्याजमर्दनः**- स्वयं कपटरहित होकर दूसरे के कपट को नष्ट करने वाले ।।११५।।

सत्ववान्सात्विकः सत्यकीर्तिः स्नेहकृतागमः।
अकम्पितो गुणग्राही नैकात्मा नैककर्मकृत् ।।११६।।

८८३ **सत्ववान्**-सत्वगुण से युक्त, ८८४ **सात्विकः**- सत्वनिष्ठ, ८८५ **सत्यकीर्तिः**- सत्य कीर्ति वाले, ८८६ **स्नेहकृतागमः**- जीवों के प्रति स्नेह के कारण विभिन्न आगमों को प्रकाश में लाने वाले, ८८७ **अकम्पितः**- सुस्थित, ८८८ **गुणग्राही**-गुणों का आदर करने वाले, ८८९ **नैकात्मा नैककर्मकृत्**- अनेक रूप होकर अनेक प्रकार के कर्म करने वाले ।।११६।।

सुप्रीतः सुमुखः सूक्ष्मा सुकरो दक्षिणानिलः ।
नन्दिस्कन्धधरो धुर्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः ।।११७।।

८९० **सुप्रीतः**- अत्यन्त प्रसन्न, ८९१ **सुमुखः**- सुन्दर मुख वाले, ८९२ **सूक्ष्मः**- स्थूल भाव से रहित, ८९३ **सुकरः**- सुन्दर हाथ वाले,

८९४ दक्षिणानिलः- मलयानिल के समान सुखद, ८९५ नन्दिस्कन्धधरः- नन्दी की पीठ पर सवार होने वाले, ८९६ धुर्यः- उत्तरदायित्व का भार वहन करने में समर्थ, ८९७ प्रकटः- भक्तों के सामने प्रकट होने वाले अथवा ज्ञानियों के सामने नित्य प्रकट, ८९८ प्रीतिवर्धनः- प्रेम बढ़ाने वाले ।।११७।।

अपराजितः सर्वसत्वो गोविन्दः सत्ववाहनः ।
अधृतः स्वधृतः सिद्धः पूतमूर्तिर्यशोधनः ।।११८।।

८९९ अपराजितः- किसी से परास्त न होने वाले, ९०० सर्वसत्वः- सम्पूर्ण सत्वगुण के आश्रय अथवा समस्त प्राणियों के उत्पत्ति के हेतु, ९०१ गोविन्दः- गोलोक की प्राप्ति कराने वाले, ९०२ सत्ववाहनः- सत्वस्वरूप धर्ममय वृषभ से वाहन का काम लेने वाले, ९०३ अधृतः- आधार रहित, ९०४ स्वधृतः- अने आप में ही स्थित, ९०५ सिद्धः- नित्यसिद्ध, ९०६ पूतमूर्तिः- पवित्र शरीर वाले, ९०७ यशोधनः- सुशय के धनी ।।११८।।

वाराहश्रृंगधृक्छृंगी बलवानेकनायकः ।
श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबन्धुरनेककृत ।।११९।।

९०८ वाराहश्रृंगधृक्छृंगी- वाराह को मारकर उसके दाढ़ रूपी श्रृंगों को धारण करने के कारण श्रृंगी नाम से प्रसिद्ध, ९०९ बलवान्- शक्तिशाली, ९१० एकनायकः- अद्वितीय नेता, ९११ श्रुतिप्रकाशः-

वेदों को प्रकाशित करने वाले, **६१२ श्रुतिमान्**- वेदज्ञान से सम्पन्न, **६१३ एकबन्धुः**- सबके एकमात्र सहायक, **६१४ अनेककृत**-अनेक प्रकार के पदार्थों की सृष्टि करने वाले।।१६।।

श्रीवत्सलशिवारम्भः शान्तभद्रः समो यशः।
भूशयो भूषणो भूतिर्भूतकृद् भूतभावनः ।।१२०।।

६१५ श्रीवत्सलशिवारम्भः- श्रीवत्सधारी विष्णु के लिये मंगलकारी, **६१६ शान्तभद्रः**- शान्त एवं मंगलरूप, **६१७ समः**- सर्वत्र समभाव रखने वाले, **६१८ यशः**- यशस्वरूप, **६१९ भूशयः**- पृथ्वी पर शयन करने वाले, **६२० भूषणः**- सबको विभूषित करने वाले, **६२१ भूतिः**- कल्याणस्वरूप, **६२२ भूतकृत्**- प्राणियों की सृष्टि करने वाले, **६२३ भूतभावनः**- भूतों के उत्पादक।।१२०।।

अकम्पो भक्तिकायस्तु कालहा नीललोहितः।
सत्यव्रतमहात्यागी नित्यशान्तिपरायणः ।।१२१।।

६२४ अकम्पः- कम्पित न होने वाले, **६२५ भक्तिकायः**- भक्तिस्वरूप, **६२६ कालहा**- काल नाशक, **६२७ नीललोहितः**- नील और लोहित वर्ण वाले, **६२८ सत्यव्रतमहात्यागी**- सत्यव्रतधारी एवं महान् त्यागी, **६२९ नित्यशान्तिपरायणः**- निरन्तर शान्त।।१२१।।

परार्थवृत्तिर्वरदो विरक्तस्तु विशारदः ।
शुभदः शुभकर्ता च शुभनामा शुभः स्वयम् ।।१२२।।

६३० **परार्थवृत्तिर्वरदः**- परोपकारव्रती एवं अभीष्ट वरदाता, ६३१ **विरक्तः**- वैराग्यवान, ६३२ **विशारदः**- विज्ञानवान्, ६३३ **शुभदः शुभकर्ता**-शुभ देने और करने वाले, ६३४ **शुभनामा शुभः स्वयम्**- स्वयं शुभस्वरूप होने के कारण शुभ नामधारी ।।१२२।।

अनर्थितोअगुणः साक्षी हयकर्ता कनकप्रभः ।
स्वभावभद्रो मध्यस्थः शत्रुघ्नो विघ्ननाशनः ।।१२३।।

६३५ **अनर्थितः**- याचनारहित, ६३६ **अगुणः**- निर्गुण, ६३७ **साक्षी अकर्ता**-द्रष्टा एवं कर्तृत्व रहित, ६३८ **कनक प्रभः**- सुवर्ण के समान कान्तिमान्, ६३९ **स्वभावभद्रः**- स्वभावतः कल्याणकारी, ६४० **मध्यस्थः**- उदासीन, ६४१ **शत्रुघ्नः**- शत्रुनाशक, ६४२ **विघ्न नाशनः**- विघ्नों का निवारण करने वाले ।।१२३।।

शिखण्डी कवची शूली जटी मुण्डी च कुण्डली ।
अमृत्युः सर्वदृक्सिंहस्तेजोराशिर्महामणिः ।।१२४।।

६४३ **शिखण्डी कवची शूली**-मोरपंख, कवच और त्रिशूल धारण करने वाले, ६४४ **जटी मुण्डी कुण्डली**-जटा, मुण्डमाला और कवच धारण करने वाले, ६४५ **अमृत्युः**- मृत्यु रहित, ६४६ **सर्वदृक्सिंहः**- सर्वज्ञों में श्रेष्ठ, ६४७ **तेजोराशिर्महामणिः**- तेजः पुञ्जः महामणि कौस्तुभादिरूप ।।१२४।।

असंख्येयोअप्रमेयात्मा वीर्यवान् वीर्यकोविदः ।
वेद्यश्चैव वियोगात्मा परावरमुनीश्वरः ।।१२५।।

६४८ **असंख्येयो अप्रमेयात्मा**- असंख्य नाम, रूप और गुणों से युक्त होने के कारण किसी के द्वारा मापे न जा सकने वाले, ६४९ **वीर्यवान् वीर्यकोविदः**- पराक्रमी एवं पराक्रम के ज्ञाता, ६५० **वेद्यः**- जानने योग्य, ६५१ **वियोगात्मा**- दीर्घकाल तक सती के वियोग में अथवा विशिष्ट योग की साधना में संलग्न हुए मन वाले, ६५२ **परावरमुनीश्वरः**- भूत और भविष्य के ज्ञाता मुनीश्वर रूप।।१२५।।

अनुत्तमो दुराघर्षो मधुरप्रियदर्शनः ।
सुरेशः शरणं सर्वः शब्दब्रह्म सतां गतिः ।।१२६।।

६५३ **अनुत्तमो दुराघर्षः**- सर्वोत्तम एवं दुर्जय, ६५४ **मधुरप्रियदर्शनः**- जिनका दर्शन मनोहर एवं प्रिय लगता है, ऐसे, ६५५ **सुरेशः**- देवताओं के ईश्वर, ६५६ **शरणम्**- आश्रयदाता, ६५७ **सर्वः**- सर्वस्वरूप, ६५८ **शब्दब्रह्म सतां गतिः**- प्रणवरूप तथा सत्पुरूषों के आश्रय।।१२६।।

कालपक्षः कालकालः कंकणीकृतवासुकिः ।
महेष्वासो महीभर्ता निष्कलंको विश्रृंखलः ।।१२७।।

६५९ **कालपक्षः**- काल जिनका सहायक है, ऐसे, ६६० **कालकालः**- काल के भी काल, ६६१ **कंकणीकृतवासुकिः**- वासुकि नाग को अपने हाथ में कंगन के समान धारण करने वाले, ६६२ **महेष्वासः**- महाधनुर्धर, ६६३ **महीभर्ता**- पृथ्वीपालक, ६६४ **निष्कलंकः**- कलंक शून्य, ६६५ **विश्रृंखलः**- बन्धन रहित।।१२७।।

द्युमणिस्तरणिर्धन्यः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ।
विश्वतः संवृतः स्तुत्यो व्यूढोरस्को महाभुजः ।।१२८।।

६६६ **द्युमणिस्त रणिः**- अकाश में मणि के समान प्रकाशमान तथा भक्तों को भवसागर से तारने के लिये नौकारूप सूर्य, ६६७ **धन्यः**- कृतकृत्य, ६६८ **सिद्धिदः सिद्धिसाधनः**- सिद्धिदाता और सिद्धि के साधक, ६६९ **विश्वतः संवृतः**- सब ओर से माया द्वारा आवृत, ६७० **स्तुत्यः**- स्तुति के योग्य, ६७१ **व्यूढोरस्कः**- चौड़ी छाती वाले, ६७२ **महाभुजः**- बड़ी बाँह वाले ।।१२८।।

सर्वयोनिर्निरातंको नरनारायणप्रियः ।
निर्लेपो निष्प्रपञ्चात्मा निर्व्यगो व्यंगनाशनः ।।१२९।।

६७३ **सर्वयोनिः**- सबकी उत्पत्ति के स्थान, ६७४ **निरातंकः**- निर्भय, ६७५ **नरनारायणप्रियः**- नर-नारायण के प्रेमी अथवा प्रियतम, ६७६ **निर्लेपो निष्प्रपञ्चात्मा**-दोष-सम्पर्क से रहित तथा जगत-प्रपञ्च से अतीत स्वरूप वाले, ६७७ **निर्व्यगः**- विशिष्ट अंग वाले प्राणियों के प्राकटय में हेतु, ६७८ **व्यंगनाशनः**- यज्ञादि कर्मों में होने वाले अंगवैगुण्य का नाश करने वाले ।।१२९।।

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोता व्यासमूर्तिनिरंकुशः ।
निरवद्यमयोपायो विद्याराशी रसप्रियः ।।१३०।।

९७९ **स्तव्यः**- स्तुति के योग्य, ९८० **स्तवप्रियः**- स्तुति के प्रेमी, ९८१ **स्तोता**- स्तुति करने वाले, ९८२ **व्यासमूर्तिः**- व्यासस्वरूप, ९८३ **निरंकुशः**- अंकुश-रहित स्वतंत्र, ९८४ **निरवद्यमयोपायः**- मोक्ष प्राप्ति के निर्दोष उपायरूप, ९८५ **विद्याराशिः**- विद्याओं के सागर, ९८६ **रसप्रियः**- ब्रह्मानन्दरस के प्रेमी ।।१३०।।

प्रशान्तबुद्धिरक्षुण्णः संग्रही नित्यसुन्दरः ।
वैयाघ्रधुर्यो धात्रीशः शाकल्यः शर्वरीपतिः ।।१३१।।

९८७ **प्रशान्तबुद्धिः**- शान्त बुद्धि वाले, ९८८ **अक्षुण्णः**- क्षोभ या नाश से रहित, ९८९ **संग्रही**- भक्तों का संग्रह करने वाले, ९९० **नित्यसुन्दरः**- सतत् मनोहर, ९९१ **वैयाघ्रधुर्यः**- व्याघ्रचर्मधारी, ९९२ **धात्रीशः**- ब्रह्माजी के स्वामी, ९९३ **शाकल्यः**- शाकल्य ऋषिरूप, ९९४ **शर्वरीपतिः**- रात्रि के स्वामी चन्द्रमारूप ।।१३।।

परमार्थगुरुर्दत्तः सूरिराश्रितवत्सलः ।
सोमो रसज्ञो रसदः सत्रसत्वावलम्बनः।।१३२।।

९९५ **परमार्थगुरुर्दत्तः सूरिः**- परमार्थतत्व का उपदेश देने वाले ज्ञानी गुरु दत्तात्रेय रूप, ९९६ **आश्रितवत्सलः**- शरणागतों पर दया करने वाले, ९९७ **सोमः**- उमासहित, ९९८ **रसज्ञः**- भक्ति रस के ज्ञाता, ९९९ **रसदः**- प्रेमरस प्रदान करने वाले, १००० **सर्वसत्वावलम्बनः**- समस्त प्राणियों को सहारा देने वाले ।।१३२।।

इस प्रकार श्रीहरि प्रतिदिन सहस्र नामों द्वारा भगवान् शिव की स्तुति, सहस्र कमलों द्वारा उनका पूजन एवं प्रार्थना किया करते थे। एक दिन भगवान् शिव की लीला से एक कमल कम हो जाने पर भगवान विष्णु ने अपना कमलोपम नेत्र ही चढ़ा दिया। इस तरह उनसे पूजित एवं प्रसन्न हो शिव ने उन्हें चक्र दिया और इस प्रकार कहा-'हरे! सब प्रकार के अनर्थों की शान्ति के लिये तुम्हें मेरे स्वरूप का ध्यान करना चाहिये। अनेकानेक दुखों का नाश करने के लिये इस सहस्रनाम का पाठ करते रहना चाहिये तथा समस्त मनोरथों की सिद्धि के लिये सदा मेरे इस चक्र को प्रयत्नपूर्वक धारण करना चाहिये, यह सभी चक्रों में उत्तम है। दूसरे भी जो लोग प्रतिदिन इस सहस्र नाम का पाठ करेंगें या करायेंगे, उन्हें स्वप्न में भी कोई दुःख नहीं प्राप्त होगा। राजाओं की ओर से संकट प्राप्त होने पर यदि मनुष्य सांगोपांग विधिपूर्वक इस सहस्रनाम-स्तोत्र का सौ बार पाठ करे तो निश्चय ही कल्याण का भागी होता है। यह उत्तम स्तोत्र रोग का नाशक, विद्या और धन देने वाला, सम्पूर्ण अभीष्ट की प्राप्ति कराने वाला, पुण्यजनक तथा सदा ही शिवभक्ति देने वाला है। जिस फल के उद्देश्य से मनुष्य यहाँ इस श्रेष्ठ स्तोत्र का पाठ करेंगे, उसे निस्संदेह प्राप्त कर लेंगे। जो प्रतिदिन सवेरे उठकर मेरी पूजा के पश्चात् मेरे सामने इसका पाठ करता है, सिद्धि उससे दूर नहीं रहती।

उसे इस लोक में सम्पूर्ण अभीष्ट को देने वाली सिद्धि पूर्णतया प्राप्त होती है और अन्त में वह सायुज्य मोक्ष का भागी होता है, इसमें संशय नहीं है।

सूतजी कहते हैं-मुनीश्वरो ! ऐसा कहकर सर्वदेवेश्वर भगवान् रुद्र श्रीहरि के देखते-देखते वहीं अन्तर्ध्यान हो गये। भगवान् विष्णु जी शंकरजी के वचन से उस शुभ चक्र को पा जाने से मन ही मन बड़े प्रसन्न हुए। फिर वे प्रतिदिन शम्भु के ध्यानपूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करने लगे। उन्होंने अपने भक्तों को भी इसका उपदेश दिया। तुम्हारे प्रश्न के अनुसार मैंने यह प्रसंग सुनाया है, जो श्रोताओं के पाप को हर लेने वाला है।

★ ★ ★

शिव सहस्रनामावली

१	शिव	१७	कपाली
२	हरः	१८	नीललोहितः
३	मृडः	१९	ध्यानाधारः
४	रुद्रः	२०	अपरिच्छेद्यः
५	पुष्करः	२१	गौरीभर्ता-
६	पुष्पलोचनः	२२	गणेश्वरः
७	अर्थिगम्यः	२३	अष्टमूर्तिः
८	सदाचारः	२४	विश्वमूर्तिः
९	शर्वः	२५	त्रिवर्गस्वर्गसाधनः
१०	शम्भुः	२६	ज्ञानगम्यः
११	महेश्वरः	२७	दृढप्रज्ञः
१२	चन्द्रापीडः	२८	देवदेवः
१३	चन्द्रमौलिः	२९	त्रिलोचनः
१४	विश्वम्	३०	वामदेवः
१५	विश्वाम्भरेश्वरः	३१	महादेवः
१६	वेदान्तसारसंदोहः	३२	पटुः

३३ परिवृढः
३४ दृढः
३५ विश्वरूपः
३६ विरूपाक्ष
३७ वागीशः
३८ शुचिसत्तमः
३९ सर्वप्रमाणसंवादीः
४० वृषांकः
४१ वृषवाहनः
४२ ईशः
४३ पिनाकी
४४ शट्वांगी
४५ चित्रवेषः
४६ चिरंतनः
४७ तमोहरः
४८ महायोगीः
४९ गोप्ता
५० ब्रह्मा
५१ धूर्जटिः
५२ कालकालः
५३ कृत्तिवासाः
५४ सुभगः
५५ प्रणवात्मकः
५६ उन्नघ्रः
५७ पुरुषः
५८ जुष्यः
५९ दुर्वासाः
६० पुरशासनः
६१ दिव्यायुधः
६२ स्कन्दगुरुः
६३ परमेष्ठी
६४ परात्परः
६५ अनादिमध्यनिधनः
६६ गिरीशः
६७ गिरिजाधवः
६८ कुबेरबन्धुः
६९ श्रीकण्ठः
७० लोकवर्णोत्तमः

७१ मृदुः
७२ समाधिवेद्यः
७३ कोदण्डी
७४ नीलकण्ठः
७५ परश्वधी
७६ विशालाक्षः
७७ मृगव्याघः
७८ सुरेशः
७९ सूर्यतापनः
८० धर्मधाम
८१ क्षमाक्षेत्रम्
८२ भगवान्
८३ भगनेत्रभित्
८४ उग्र
८५ पशुपतिः
८६ तार्क्ष्यः
८७ प्रियभक्तः
८८ परंतपः
८९ दाता
९० दयाकरः
९१ दक्षः
९२ कपर्दी
९३ कामशासनः
९४ श्मशाननिलयः
९५ सूक्ष्मः
९६ श्मशानस्थः
९७ महेश्वरः
९८ लोककर्ता
९९ मृगपतिः
१०० महाकर्ता
१०१ चित्रवेषः
१०२ महौषधिः
१०३ उत्तरः
१०४ गोपतिः
१०५ गोप्ता
१०६ ज्ञानगम्यः
१०७ पुरातनः
१०८ नीतिः

१०६ सुनीतिः
११० शुद्धात्मा
१११ सोमः
११२ सोमरतः
११३ सुखी
११४ सोमपः
११५ अमृतपः
११६ सौम्यः
११७ महातेजः
११८ महाद्युतिः
११९ तेजोमयः
१२० अमृतमयः
१२१ अन्नमयः
१२२ सुधापतिः
१२३ अजातशत्रुः
१२४ आलोकः
१२५ सम्भाव्यः
१२६ हव्यवाहनः
१२७ लोककरः
१२८ वेदकरः
१२९ सूत्रकारः
१३० सनातनः
१३१ महर्षिकपिलाचार्य
१३२ विश्वदीप्तिः
१३३ त्रिलोचनः
१३४ पिनाकपाणिः
१३५ भूदेवः
१३६ स्वस्तिदः
१३७ स्वस्तिकृत्
१३८ सुधीः
१३९ धातृधामा
१४० धामकरः
१४१ सर्वगः
१४२ सर्वगोचरः
१४३ ब्रह्मसृक्
१४४ विश्वसृक्
१४५ सर्गः
१४६ कर्णिकारप्रियः

१४७ कविः
१४८ शाखः
१४९ विशाखः
१५० गोशाखः
१५१ शिवः
१५२ भिषगनुत्तमः
१५३ गंगाप्लवोदकः
१५४ भव्यः
१५५ पुष्कलः
१५६ स्थपतिः
१५७ स्थिरः
१५८ विजितात्मा
१५९ विधेयात्मा
१६० भूतवाहनसारथिः
१६१ सगणः
१६२ गणकायः
१६३ सुकीर्तिः
१६४ छिन्नसंशयः
१६५ कामदेवः
१६६ कामपालः
१६७ भस्मोद्धूलित
१६८ भस्मप्रियः
१६९ भस्मशायी
१७० कामी
१७१ कान्तः
१७२ कृतागमः
१७३ समावर्तः
१७४ अनिवृत्तात्मा
१७५ धर्मपुञ्जः
१७६ सदाशिवः
१७७ अकल्मषः
१७८ चतुर्बाहुः
१७९ दुरावासः
१८० दुरासदः
१८१ दुर्लभः
१८२ दुर्गमः
१८३ दुर्गः
१८४ सर्वायुधविशारदः

१८५ अध्यात्मयोगनिलयः
१८६ सुतन्तुः
१८७ तन्तुवर्धनः
१८८ शुभांगः
१८९ लोकसारंगः
१९० जगदीशः
१९१ जनार्दनः
१९२ भस्मशुद्धिकरः
१९३ मेरुः
१९४ ओजस्वी
१९५ शुद्धविग्रहः
१९६ असाध्यः
१९७ साधुसाध्यः
१९८ भृत्यमर्कटरूपधृक्
१९९ हिरण्यरेताः
२०० पौराणः
२०१ रिपजीवहरः
२०२ बली
२०३ महाहदः
२०४ महागर्तः
२०५ सिद्धवृन्दारवन्दितः
२०६ व्याघ्रचर्माम्बर
२०७ व्याली
२०८ महाभूतः
२०९ महानिधिः
२१० अमृताशः
२११ अमृतवपुः
२१२ पाञ्चजन्यः
२१३ प्रभञ्जनः
२१४ पञ्चविंशतितत्वस्थः
२१५ पारिजातः
२१६ परावरः
२१७ सुलभः
२१८ सुव्रतः
२१९ शूरः
२२० ब्रह्मवेदनिधिः
२२१ निधिः
२२२ वर्णाश्रमगुरुः

२२३ वर्णी
२२४ शत्रुजित्
२२५ शत्रुपातनः
२२६ आश्रमः
२२७ क्षपणः
२२८ क्षामः
२२९ ज्ञानवान्
२३० अचलेश्वरः
२३१ प्रमाणभूतः
२३२ दुर्ज्ञेयः
२३३ सुपर्णः
२३४ वायुवाहनः
२३५ धनुर्धरः
२३६ धनुर्वेदः
२३७ गुणराशिः
२३८ गुणाकरः
२३९ सत्यः
२४० सत्यपरः
२४१ अदीनः
२४२ धर्मागः
२४३ धर्मसाधनः
२४४ अनन्तदृष्टिः
२४५ आनन्दः
२४६ दण्डः
२४७ दमयिता
२४८ दमः
२४९ अभिवाद्यः
२५० महामायः
२५१ विश्वकर्मविशारदः
२५२ वीतरागः
२५३ विनीतात्मा
२५४ तपस्वी
२५५ भूतभावनः
२५६ उन्मत्तवेषः
२५७ प्रच्छन्नः
२५८ जितकामः
२५९ अजितप्रियः
२६० कल्याणप्रकृतिः

२६१ कल्पः
२६२ सर्वलोकप्रजापतिः
२६३ तरस्वी
२६४ तारकः
२६५ धीमान्
२६६ प्रधानः
२६७ प्रभुः
२६८ अव्ययः
२६९ लोकपालः
२७० अन्तर्हितात्मा
२७१ कल्पादिः
२७२ कमलेक्षणः
२७३ वेदशास्त्रार्थ
२७४ अनियमः
२७५ नियताश्रया
२७६ चन्द्रः
२७७ सूर्यः
२७८ शनिः
२७९ केतुः
२८० वरांगः
२८१ विद्रुमच्छविः
२८२ भक्तिवश्यः
२८३ परब्रह्म
२८४ मृगबाणार्पणः
२८५ अनघः
२८६ अद्रिः
२८७ अद्रयालयः
२८८ कान्तः
२८९ परमात्मा
२९० जगद्गुरुः
२९१ सर्वकर्मालयः
२९२ तुष्टः
२९३ मंगल्यः
२९४ मंगलावृतः
२९५ महातपाः
२९६ दीर्घतपाः
२९७ स्थविष्ठः
२९८ स्थविरो ध्रुवः

२९९ अहःसंवत्सरः
३०० व्याप्तिः
३०१ प्रमाणम्
३०२ परमं तपः
३०३ संवत्सरकरः
३०४ मन्त्रप्रत्ययः
३०५ सर्वदर्शनः
३०६ अजः
३०७ सर्वेश्वरः
३०८ सिद्धः
३०९ महारेताः
३१० महाबलः
३११ योगी योग्यः
३१२ महातेजाः
३१३ सिद्धिः
३१४ सर्वादिः
३१५ अग्रहः
३१६ वसुः
३१७ वसुमनाः
३१८ सत्यः
३१९ सर्वपापहरो हरः
३२० सुकीर्तिशोभनः
३२१ श्रीमान्
३२२ वेदांगः
३२३ वेदविन्मुनिः
३२४ भ्राजिष्णुः
३२५ भोजनम्
३२६ भोक्ता
३२७ लोकनाथः
३२८ दुराधरः
३२९ शान्तः
३३० बाणाहस्तः
३३१ कमण्डलुधरः
३३२ धन्वी
३३३ अवाङ्-मनसगोचरः
३३४ अतीन्द्रियोमहामायः
३३५ सर्वावासः
३३६ चतुष्पथः

३३७ कालयोगीः
३३८ महानादः
३३९ महोत्साहो महाबलः
३४० महाबुद्धिः
३४१ महावीर्यः
३४२ भूतचारी
३४३ पुरंदरः
३४४ निशाचरः
३४५ प्रेतचारी
३४६ महाशक्तिर्महाद्युतिः
३४७ अनिर्देश्यवपुः
३४८ श्रीमान्
३४९ सर्वाचार्यमनोगतिः
३५० बहुश्रुतः
३५१ अमहामायः
३५२ नियतात्मा
३५३ ध्रुवोअध्रुवः
३५४ ओजस्तेजोद्युतिधरः
३५५ जनकः
३५६ सर्वशासनः
३५७ नृत्यप्रियः
३५८ नित्यनृत्यः
३५९ प्रकाशात्मा
३६० प्रकाशकः
३६१ स्पष्टाक्षरः
३६२ बुधः
३६३ मन्त्रः
३६४ समानः
३६५ सारसम्प्लवः
३६६ युगादिकृद्युगावर्तः
३६७ गम्भीरः
३६८ वृषवाहनः
३६९ इष्टः
३७० अविशिष्टः
३७१ शिष्टेष्टः
३७२ सुलभः
३७३ सारशोधनः
३७४ तीर्थरुपः

३७५ तीर्थनामा
३७६ उत्तरः
३७७ तीर्थदृश्यः
३७८ तीर्थदः
३७९ अपांनिधिः
३८० अधिष्ठानम्
३८१ दुर्जयः
३८२ जयकालवित्
३८३ प्रतिष्ठितः
३८४ प्रमाणज्ञः
३८५ हिरण्यकवचः
३८६ हरिः
३८७ विमोचनः
३८८ सुरगणः
३८९ विद्येशः
३९० बिन्दुसंश्रयः
३९१ बालरूपः
३९२ अवलोन्मत्तः
३९३ अविकर्ता
३९४ गहनः
३९५ गुहः
३९६ करणम्
३९७ कारणम्
३९८ कर्ता
३९९ सर्वबन्धविमोचनः
४०० व्यवसायः
४०१ व्यवस्थानः
४०२ स्थानदः
४०३ जगदादिजः
४०४ गुरुदः
४०५ ललितः
४०६ अभेदः
४०७ भावात्माअत्मनि
४०८ वीरेश्वरः
४०९ वीरभद्रः
४१० वीरासनविधिः
४११ विराट्
४१२ वीरचूडामणिः

४१३ वेत्ता
४१४ चिदानन्दः
४१५ नदीधरः
४१६ आज्ञाधारः
४१७ त्रिशूली
४१८ शिपिविष्टः
४१९ शिवालयः
४२० वालखिल्यः
४२१ महाचापः
४२२ तिग्मांशुः
४२३ बधिरः
४२४ खगः
४२५ अभिरामः
४२६ सुशरणः
४२७ सुब्रह्मण्यः
४२८ सुधापतिः
४२९ मघवान् कौशिकः
४३० गोमान्
४३१ विरामः
४३२ सर्वसाधनः
४३३ ललाटाक्षः
४३४ विश्वदेहः
४३५ सारः
४३६ संसारचक्रभृत्
४३७ अमोघदण्डः
४३८ मध्यस्थः
४३९ हिरण्यः
४४० ब्रह्मवर्चसी
४४१ परमार्थः
४४२ परो मायी
४४३ शम्बरः
४४४ व्याघ्रलोचनः
४४५ रुचिः
४४६ विरश्चिः
४४७ स्वर्वन्धुः
४४८ वाचस्पतिः
४४९ अहर्पतिः
४५० रविः

४५१ विरोचनः
४५२ स्कन्दः
४५३ शास्ता वैवस्वतो
४५४ युक्तिरून्नतकीर्तिः
४५५ सानुरागः
४५६ परंजयः
४५७ कैलासाधिपतिः
४५८ कान्तः
४५९ सविता
४६० रविलोचनः
४६१ विद्वत्तमः
४६२ वीतभयः
४६३ विश्वभताः
४६४ अनिवारितः
४६५ नित्यः
४६६ नियतकल्याणः
४६७ पुण्यश्रवणकीर्तनः
४६८ दूरश्रवाः
४६९ विश्वसहः
४७० ध्येयः
४७१ दुरास्वप्ननाशनः
४७२ उत्तारणः
४७३ दृष्कृतिहा
४७४ विज्ञेयः
४७५ दुस्सहः
४७६ अभवः
४७७ अनादिः
४७८ भूर्भवो लक्ष्मीः
४७९ किरीटी
४८० त्रिदशाधिपः
४८१ विश्वगोप्ता
४८२ विश्वकर्ता
४८३ सुवीरः
४८४ रुचिरांगदः
४८५ जननः
४८६ जनजन्मादिः
४८७ प्रीतिमान्
४८८ नीतिमान्

४८९ धवः
४९० वसिष्ठः
४९१ कश्यपः
४९२ भानुः
४९३ भीमः
४९४ भीमपराक्रमः
४९५ प्रणवः
४९६ सत्पथाचारः
४९७ महाकोशः
४९८ महाधनः
४९९ जन्माधिपः
५०० महादेवः
५०१ सकलागमपारगः
५०२ तत्वम्
५०३ तत्ववित्
५०४ एकात्मा
५०५ विभुः
५०६ विश्वभूषणः
५०७ ऋषिः
५०८ ब्राह्मणः
५०९ ऐश्वर्यजन्मः
५१० पञ्चयज्ञ
५११ विश्वेशः
५१२ विमलोदयः
५१३ आत्मयोनिः
५१४ अनाद्यन्तः
५१५ वत्सलः
५१६ भक्तलोकधृक्
५१७ गायत्रीवल्लभः
५१८ प्रांशुः
५१९ विश्वावासः
५२० प्रभाकरः
५२१ शिशुः
५२२ गिरिरतः
५२३ सम्राट्
५२४ सुषेणः सुरशत्रुहा
५२५ अमोघोअरिष्टनेमिः
५२६ कुमुदः

५२७ विगतज्वरः
५२८ स्वयंज्योतिस्तनुज्योतिः
५२९ आत्मज्योतिः
५३० अचञ्चलः
५३१ पिंगलः
५३२ कपिलश्मश्रुः
५३३ भालनेत्रः
५३४ त्रयीतनुः
५३५ ज्ञानस्कन्दो महानीतिः
५३६ विश्वोत्पत्तिः
५३७ उपप्लवः
५३८ भगो विवस्वानादित्यः
५३९ योगपारः
५४० दिवस्पतिः
५४१ पापहा
५४२ पुण्यदर्शनः
५४३ उदारकीर्तिः
५४४ उद्योगी
५४५ सद्योगी
५४६ सदसन्मयः
५४७ नक्षत्रमाली
५४८ नाकेशः
५४९ स्वाधिष्ठान-पदाश्रयः
५५० पवित्रः पापहारी
५५१ मणिपूरः
५५२ नभोगतिः
५५३ हृत्पुण्डरीकमासीनः
५५४ शक्रः
५५५ शान्तः
५५६ वृषाकपिः
५५७ ऊष्णः
५५८ गृहपतिः
५५९ कृष्णः
५६० समर्थः
५६१ अनर्थनाशनः
५६२ हरिः
५६३ अधर्मशत्रुः
५६४ अज्ञेयः

५६५ पुरुहूतः पुरुश्रुतः
५६६ ब्रह्मगर्भः
५६७ बृहद्गर्भः
५६८ धर्मधेनुः
५६९ धनागमः
५७० जगद्धितैषी
५७१ सुगतः
५७२ कुमारः
५७३ कुशलागमः
५७४ हिरण्यवर्णः
५७५ नानाभूतरतः
५७६ ध्वनिः
५७७ अरागः
५७८ नयनाध्यक्षः
५७९ विश्वामित्रः
५८० धनेश्वरः
५८१ ब्रह्मज्योतिः
५८२ वसुधामा
५८३ महाज्योतिरनु
५८४ मातामहः
५८५ मातरिश्वा
५८६ नागहारधृक्
५८७ पुलस्त्यः
५८८ पुलहः
५८९ अगस्त्यः
५९० जातूकर्ण्यः
५९१ पराशरः
५९२ निरावरणनिर्वारः
५९३ वैरञ्च्यः
५९४ विष्टरश्रवाः
५९५ आत्मभूः
५९६ अनिरुद्धः
५९७ अत्रिः
५९८ ज्ञानमूर्तिः
५९९ महायशाः
६०० लोकवीराग्रणीः
६१० वीरः
६०२ चण्डः

६०३ सत्यपराक्रमः
६०४ व्यालाकल्पः
६०५ महाकल्पः
६०६ कल्पवृक्षः
६०७ कलाधरः
६०८ अलंकरिष्णुः
६०९ अचलः
६१० रोचिष्णुः
६११ विक्रमोन्नतः
६१२ आयुः शब्दपतिः
६१२ वेगी प्लवनः
६१४ शिखिसारथिः
६१५ असंसृष्णः
६१६ अतिथिः
६१७ शक्रप्रमाथी
६१८ पादपासनः
६१९ वसुश्रवाः
६२० हव्यावाहः
६२१ प्रतप्तः
६२२ विश्वभोजनः
६२३ जप्यः
६२४ जरादिशमनः
६२५ लोहितात्मा
६२६ बृहदश्वः
६२७ नभोयोनिः
६२८ सुप्रतीक
६२९ तमिस्रहा
६३० निदाधस्तपनः
६३१ मेघः
६३२ स्वक्षः
६३३ परपुरंजयः
६३४ सुखानिलः
६३५ सुनिष्पन्नः
६३६ सुरभिः शिशिरात्मकः
६३७ वसन्तः माधवः
६३८ ग्रीष्मः
६३९ नभस्यः
६४० बीजवाहनः

६४१ अंगिरा गुरुः
६४२ आत्रेयः
६४३ विमलः
६४४ विश्ववाहनः
६४५ पावनः
६४६ सुमतिर्विद्वान्
६४७ त्रैविद्यः
६४८ वरवाहनः
६४९ मनोबुद्धिरहंकारः
६५० क्षेत्रज्ञः
६५१ क्षेत्रपालकः
६५२ जमदग्निः
६५३ बलनिधिः
६५४ विगालः
६५५ विश्वगालवः
६५६ अघोरः
६५७ अनुत्तरः
६५८ यज्ञः श्रेष्ठः
६५९ निःश्रेयसप्रदः
६६० शैलः
६६१ गगनकुन्दाभः
६६२ दानवारिः
६६३ अरिंदम
६६४ रजनीजनकश्च
६६५ निःशल्यः
६६६ लोकशल्यधृक्
६६७ चतुर्वेदः
६६८ चतुरश्चतुरप्रिय
६६९ आम्नायः
६७० समाम्नायः
६७१ तीर्थदेवशिवालयः
६७२ बहुरूपः
६७३ महारूपः
६७४ सर्वरूपश्चराचरः
६७५ न्यायनिर्मायको
६७६ न्यायगम्यः
६७७ निरञ्जनः
६७८ सहस्रमूर्द्धा

६७९ देवेन्द्रः
६८० सर्वशस्त्रप्रभञ्जनः
६८१ मुण्डः
६८२ विरूपः
६८३ विक्रान्तः
६८४ दण्डी
६८५ दान्तः
६८६ गुणोत्तमः
६८७ पिंगलाक्षः
६८८ जनाध्यक्षः
६८९ नीलग्रीवः
६९० निरामयः
६९१ सहस्रबाहुः
६९२ सर्वेशः
६९३ शरण्यः
६९४ सर्वलोकधृक्
६९५ पद्मासनः
६९६ परं ज्योतिः
६९७ पारम्पर्य्यफलप्रदः
६९८ पद्मगर्भः
६९९ महागर्भः
७०० विश्वगर्भः
७०१ विचक्षणः
७०२ परावरज्ञः
७०३ वरदः
७०४ वरेण्यः
७०५ महास्वनः
७०६ देवासुरगुरुर्देवः
७०६ देवासुरनमस्कृतः
७०८ देवासुरमहामित्रः
७०९ देवासुरमहेश्वरः
७१० देवासुरेश्वरः
७११ दिव्यः
७१२ देवासुरमहाश्रयः
७१३ लोकोत्तरस्फुटालोकः
७१४ त्रयम्बकः
७१५ नागभूषण
७१६ अन्धकारिः

७१७ मखद्वेषी
७१८ विष्णुकन्धरपातनः
७१९ हीनदोषः
७२० अक्षयगुणः
७२१ दक्षारिः
७२२ पूषदन्तभित्
७२३ धूर्जटिः
७२४ खण्डपरशुः
७२५ सकलो निष्कलः
७२६ अनघः
७२७ अकालः
७२८ सकलाधारः
७२९ पाण्डुराभः
७३० मृडो नटः
७३१ पूर्णः
७३२ पूरयिता
७३३ पुण्यः
७३४ सुकुमारः
७३५ सुलोचनः
७३६ सामगेयप्रियः
७३७ अक्रूरः
७३८ पुण्यकीर्तिः
७३९ अनामयः
७४० मनोजवः
७४१ तीर्थकरः
७४२ जटिलः
७४३ जीवितेश्वरः
७४४ जीवितान्तकरः
७४५ नित्यः
७४६ वसुरेताः
७४७ वसुप्रदः
७४८ सद्गतिः
७४९ सत्कृतिः
७५० सिद्धिः
७५१ पुलहः
७५२ सज्जातिः
७५३ खलकण्टकः
७५४ कलाधरः

७५५ महाकालभूतः
७५६ देवदेवमयः
७५७ अचिन्त्यः
७५८ देवदेवात्मसम्भवः
७५९ सद्योनिः
७६० असुरव्याघ्रः
७६१ देवसिंहः
७६२ दिवाकरः
७६३ विबुधाग्रचरश्रेष्ठः
७६४ सर्वदेवोत्तमोत्तमः
७६४ शिवज्ञानरतः
७६६ श्रीमान्
७६७ शिखिश्रीपर्वतप्रियः
७६८ वज्रहस्तः
७६९ सिद्धखंगः
७७० नरसिंहनिपातनः
७७१ ब्रह्मचारी
७७२ लोकचारी
७७३ धर्मचारी
७७४ धनाधिपः
७७५ नन्दीश्वरः
७७६ अनन्तः
७७७ नग्नव्रतधरः
७७८ शुचिः
७७९ लिंगाध्यक्षः
७८० सुराध्यक्षः
७८१ योगाध्यक्षः
७८२ युगावहः
७८३ स्वधर्मा
७८४ स्वर्गतः
७८५ स्वर्गस्वरः
७८६ स्वरमयस्वनः
७८७ बाणाध्यक्षः
७८८ बीजकर्ता
७८९ धर्मकृद्धर्मसम्भवः
७९० दम्भः
७९१ अलोभः
७९२ अर्थविच्छम्भुः

७९३ सर्वभूतमहेश्वरः
७९४ श्मशाननिलयः
७९५ त्रयक्षः
७९६ सेतुः
७९७ अप्रतिमाकृतिः
७९८ सत्यपरायणः
७९९ लोकलावण्यकर्ता
८०० लोकोत्तरसुखालयः
८०१ चन्द्रसंजीवनः
८०२ लोकगूढ़ः
८०३ महाधिपः
८०४ लोकबन्धुर्लोकनाथः
८०५ कृतज्ञः
८०६ कीर्तिभूषणः
८०७ अनपायोअषरः
८०८ कान्तः
८०९ सर्वशस्त्रभृतां वरः
८१० तेजोमयो द्युतिधरः
८११ लोकानामग्रणीः
८१२ अणुः
८१३ शुचिस्मितः
८१४ प्रसन्नात्मा
८१५ दुर्जेयः
८१६ दुरतिक्रमः
८१७ ज्योतिर्मयः
८१८ जगन्नाथः
८१९ निराकारः
८२० जलेश्वरः
८२१ तुम्बवीणः
८२२ महाकोपः
८२३ विशोकः
८२४ शोकनाशनः
८२५ त्रिलोकपः
८२६ त्रिलोकेशः
८२७ सर्वशुद्धिः
८२८ अधोक्षजः
८२९ अव्यक्तलक्षणो
८३० व्यक्ताव्यक्तः

८३१ विशाम्पतिः
८३२ वरशीलः
८३३ वरगुणः
८३४ सारः
८३५ मानधनः
८३६ मयः
८३७ ब्रह्मा
८३८ विष्णुः प्रजापालः
८३९ हंसः
८४० हंसगतिः
८४१ वयः
८४२ वेधा विधाता
८४३ स्रष्टा
८४४ हर्ता
८४५ चतुर्मुखः
८४६ कैलासशिखरा वासी
८४७ सर्वावासी
८४८ सदागतिः
८४९ हिरण्यगर्भः
८५० द्रुहिणः
८५१ भूतपालः
८५२ भूपतिः
८५३ सद्योगी
८५४ योगविद्योगी
८५५ वरदः
८५६ ब्राह्मणप्रियः
८५७ देवप्रियो देवनाथ
८५८ देवज्ञः
८५९ देवचिन्तकः
८६० विषमाक्षः
८६१ विशालाक्षः
८६२ वृषदोवृषवर्धनः
८६३ निर्ममः
८६४ निरहंकारः
८६५ निर्मोहः
८६६ निरुपद्रवः
८६७ दर्पहा दर्पदः
८६८ दृप्तः

८६९ सर्वर्तुपरिवर्तकः
८७० सहस्रजित्
८७१ महस्रार्चिः
८७२ स्निग्धप्रकृतिदक्षिण
८७३ भूतभव्यभवन्नाथः
८७४ प्रभवः
८७५ भूतिनाशनः
८७६ अर्थः
८७७ अनर्थः
८७८ महाकोशः
८७९ परकार्यैकपण्डितः
८८० निष्कण्टकः
८८१ कृतानन्दः
८८२ निर्व्याजोः
८८३ सत्ववान्
८८४ सात्विकः
८८५ सत्यकीर्तिः
८८६ स्नेहकृतागमः
८८७ अकम्पितः
८८८ गुणग्राही
८८९ नैकात्मा
८९० सुप्रीतः
८९१ सुमुखः
८९२ सूक्ष्मः
८९३ सुकरः
८९४ दक्षिणानिलः
८९५ नन्दिस्कन्धधरः
८९६ धुर्यः
८९७ प्रकटः
८९८ प्रीतिवर्धनः
८९९ अपराजितः
९०० सर्वसत्वः
९०१ गोविन्दः
९०२ सत्ववाहनः
९०३ अधृतः
९०४ स्वधृतः
९०५ सिद्धः
९०६ पूतमूर्तिः

६०७ यशोधनः
६०८ वाराहश्रृंगधृक्छृंगी
६०९ बलवान्
६१० एकनायकः
६११ श्रुतिप्रकाशः
६१२ श्रुतिमान्
६१३ एकबन्धुः
६१४ अनेककृत्
६१५ श्रीवत्सलशिवारम्भः
६१६ शान्तभद्रः
६१७ समः
६१८ यशः
६१९ भूशयः
६२० भूषणः
६२१ भूतिः
६२२ भूतकृत्
६२३ भूतभावनः
६२४ अकम्पः
६२५ भक्तिकायः
६२६ कालहा
६२७ नीललोहितः
६२८ सत्यव्रतमहात्यागी
६२९ नित्यशान्तिपरायण
६३० परार्थवृत्तिर्वरदः
६३१ विरक्तः
६३२ विशारदः
६३३ शुभदः शुभकर्ता
६३४ शुभनामा शुभः
६३५ अनर्थितः
६३६ अगुणः
६३७ साक्षी अकर्ता
६३८ कनक प्रभः
६३९ स्वभावभद्रः
६४० मध्यस्थः
६४१ शत्रुघ्नः
६४२ विघ्ननाशनः
६४२ शिखण्डी कवची
६४४ जटी मुण्डी कुण्डली

६४५ अमृत्युः
६४६ सर्वदृक्सिंहः
६४७ तेजोराशिर्महा मणिः
६४८ असंख्येयो अप्रमेयात्मा
६४९ वीर्यवान् वीर्यकोविदः
६५० वेद्यः
६५१ वियोगात्मा
६५२ परावरमुनीश्वरः
६५३ अनुत्तमो दुराघर्ष
६५४ मधुरप्रियदर्शनः
६५५ सुरेशः
६५६ शरणम्
६५७ सर्वः
६५८ शब्दब्रह्म
६५९ कालपक्षः सतां गतिः
६६० कालकालः
६६१ कंकणीकृतवासुकि
६६२ महेष्वासः
६६३ महीभर्ता
६६४ निष्कलंकः
६६५ विश्रृंकलंकः
६६६ द्युमणिस्त रणिः
६६७ धन्यः
६६८ सिद्धिदः
६६९ विश्वतः संवृतः
६७० स्तुत्यः
६७१ व्यूढोरस्कः
६७२ महाभुजः
६७३ सर्वयोनिः
६७४ निरातंकः
६७५ नरनारायणप्रिय
६७६ निर्लेपो निष्प्रपञ्चात्मा
६७७ निर्व्यंगः
६७८ व्यंगनाशनः
६७९ स्तव्यः
६८० स्तवप्रियः
६८१ स्तोता
६८२ व्यासमूर्तिः

९८३ निरंकुशः
९८४ निरवद्यमयोपायः
९८५ विद्याराशिः
९८६ रसप्रियः
९८७ प्रशान्तबुद्धिः
९८८ अक्षुण्णः
९८९ संग्रही
९९० नित्यसुन्दरः
९९१ वैयाघ्रधुर्यः
९९२ धात्रीशः
९९३ शाकल्यः
९९४ शर्वरीपतिः
९९५ परमार्थगुरुर्दत्तः
९९६ आनिश्रतवत्सलः
९९७ सोमः
९९८ रसज्ञः
९९९ रसदः
१००० सर्वसत्वावल्म्बनः

★ ★ ★

श्री शंकर-शत नामावली

जय महादेव देवाधिदेव,
भोले शंकर शिव सुखरासी ।
जय रामेश्वर जय सोमेश्वर,
जय घुश्मेश्वर जय कैलाशी ।।
जय गंगाधार त्रिशूलधर शशिधर,
सत्रेश्वर जय अविनाशी ।।
जय विश्वात्मन विभूःविश्वनाथ,
जय उमानाथ काटो फाँसी ।।
सर्वव्यापी अन्तर्यामी शिव,
रुद्र निरामय त्रयलोचन ।।
भव भयहारी जय त्रिपुरारी,
जय मदन दहन जय दुखमोचन ।।
मृत्युँजय आशुतोष अघहर,
जय बैजनाथ जय वृषभध्वज ।
जय लोकनाथ जय मन्मथारि,
जय २ महेश जय मृड जय जय ।।
जय गौरिपति जय चन्द्रमौलि,
जय नीलकंठ जय अभयंकर ।
त्रयताप हरो सब पाप हरो,
हर हाथ जोड़ ठाड़ो किंकर ।।

कालहु के काल जय महाकाल,
जय चण्डीश्वर जय सिद्धेश्वर ।
जय योगेश्वर जय गोपेश्वर,
जय निर्विकार जय नागेश्वर ।।
जय ब्रह्म -रुप ब्रह्मण्य देव,
जय धूर्जटे अवढर दानी ।
जय घोरमन्यु जय ज्ञानात्मा,
सबने ही आन तेरी मानी ।
जय २ सुरेश जय गिरिजापति,
जय दिशाध्यक्ष जय दिग्वसनम् ।
जय विरूपाक्ष कैवल्य-प्राप्त,
निर्वाण रूप, जय ईशानम् ।।
व्यालोपवीति जय वामदेव,
ओंकारेश्वर सब दुःख-हरनं ।
हो प्रेमवश्य करुणामय प्रभु,
नित भक्तों के आनन्द करनं ।।
जय २ कपर्दि जय स्थाणुं,
जय नर्वदेश जय ब्रह्मचारी ।
जय अमर नाथ जय सोमनाथ,
जय शूलपाणि जय कामारी ।।
बाघम्बरधारी रुण्डधारी,
जय श्मशान वासी बाबा ।
मधुर मधुर चण्डाति चण्ड,
तेरा स्वरूप भोले बाबा ।।

पशुपति सुरपति निर्वाण रूप,
जय रवि शशि अनल नेत्रधारी ।
है शक्ति कहाँ जो गुण गावें,
महिमा है तुम्हारी अतिभारी ।
जय परमानयद जय चिदानन्द,
आनन्दकन्द जय दयाधाम ।
दुनियां से सुनते आये हैं,
भक्तों के सारे सभी काम ।।
जय नन्दीश्वर जय प्रणतपाल,
जय शम्भु सनातन हर हर हर ।
पूरण समर्थ सर्वज्ञ सर्व,
जय त्रिपुण्डधारी हर हर हर ।।
कल्याण रूप और शान्त रूप
ताण्डव के हेतु हे डमरूधर ।
हर पाप क्लेश और दोष सभी,
त्रयताप दया करके सब हर ।।
शरणागत हैं प्रभु त्राहि-त्राहि,
निज भक्ति देहु अरु करो अभय ।
जो नाम जपै यह प्रेम सहित,
उसको नहीं व्यापै कोई भय ।।
तेरा नाम मात्र ही जनम जनम,
के पाप भस्म कर देता है ।
हैं धन्य भाग उस मानव के,
इतने नाम नित लेता है ।।

हाथ जोड़ विनती करूँ, क्षमा करो सब चुक ।
लगी लगन ऐसी कछू, रह न सको मैं मूक ।।

हमें भक्ति प्रभु दीजिये, अहो दया के धाम ।
सीताराम, सीताराम, सीताराम सीताराम ।।

आरती शंकर जी की

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ।।१।।
ॐ हर हर हर महादेव - - - - -

एकानन चतुरानन पंचानन राजै ।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ।।२।।
ॐ हर हर हर महादेव - - - - -

दो भुज चारुचतुर्भुज दस भुज अति सोहै ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहे ।।३।।
ॐ हर हर हर महादेव - - - - -

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी ।
चन्दन मृग मद लेपन भोले शुभकारी ।।
पार्वती पर्वत में बसती शिवजी कैलाशा ।
आक धतूरा को भोजन भंग में बासी हैं ।।५।।
ॐ हर हर हर महादेव - - - - -

शिवजी के हाथों में कंगन कानों में कुण्डल ।
गल मोतियन माला, जटा मृदंग विराजे ।।
ओढ़े शीश मृग छाला ।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ।।६।।

ॐ हर हर हर महादेव - - - - -

कर मध्ये कमण्डल-चक्र त्रिशूल-धारी ।
जगकर्ता जगहर्ता जग-पालनकारी ।।७।।

ॐ हर हर हर महादेव - - - - -

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ध्यावत अविवेका ।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों ही एका ।।८।।

ॐ हर हर हर महादेव - - - - -

काशी में विश्वनाथ विराजतनन्दा ब्रह्मचारी ।
नित उठ भोग लगावत महिमा अतिभारी ।।९।।

ॐ हर हर हर महादेव - - - - -

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई गावै ।
भजत शिवानन्द स्वामी मनवाँछित फल पावै ।।१०।।

ॐ हर हर हर महादेव - - - - -

श्री शिवाष्टक

आदि अनादि अनन्त, अखण्ड अभेद सुवेद बतावैं ।
अलख अगोचर रुप महेश कौ, जोगि जति-मुनि ध्यान न पावैं ।।
आगम-निमग-पुरान सबैं, इतिहास सदा जिनके गुण गावैं ।
बड़ भागी नर-नारि सोई, जो साँब-सदाशिव को नित ध्यावै ।।
सृजन, सुपालन लय लीलाहित, जो विधि-हररुप बनावैं ।
एकहि आप विचित्र अनेक, सुबेस बनाईकैं लीला रचावैं ।।
सुन्दर सृष्टि सुपालन करि, जग पुनि बन काल जु खाय पचावें ।
बड़ भागी नर-नारि सोई जो, साँब-सदा शिव को नित ध्यावैं ।।
अगुन अनीह अनामय अज, अविकार सहज निजरूप धरावैं ।
परम सुरम्यबसन-आभूषन, सजि मुनि मोहन रूप करावैं ।।
ललित ललाट बाल विधु विलसै, रतन-हार उर पै लहरावैं ।
बड़ भागी नर-नारि सोई जो, साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं ।।
अंग विभूति रमाय मसान की, विषमय भुजंगनि को लपटावैं ।
नर-कपाल कर, मुण्डमाल गल, भालु चर्म सब अंग उड़ावैं ।।
घोर दिगम्बर लोचन तीन, भयानक देखि कै सब थरावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो, साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं ।।

सुनतहि दीन की दीन पुकार, दयानिधि आप उबारन आवैं ।
पहुँच तहाँ अविलम्ब सुदारून, -मृत्यु को मर्म विदारि भगावैं ।।
मुनि मृकंडु-सुत की गाथा सुचि, अजहूं, विज्ञ जन गाई सुनावैं ।
बड़ भागी, नर-नारि सोई जो, साँब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं ।।
चाउरचारि जो फूल धतूर के, बेल के पात औ पानी चढ़ावैं ।
गाल जाय के बोल जो, 'हरहर महादेव' धुनि जोर लगावैं ।
तिनहि महाफलदेयँ सदाशिव, सहजहि मुक्ति-भुक्ति सो पावैं ।
बड़भागी, नर-नारि सोई जो साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं ।।
बिनसि दोष दुःख दुरित दैन्य, दारिद्रयं नित्यसुखशांति मिलावैं ।
आसुतोष हर पाप-ताप सब, निरमल बुद्धिचित्त बकसावैं ।।
असरन-सरन काटि भवबन्धन, भव जिन भवन भव्य बुलवावैं ।
बड़भागी, नर-नारि सोई जो, साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं ।।
औढ़रदानील, उदार अपार जु, नैक-सी सेवा तें ढुरि जावैं ।
दमन अशांति, समन संकट, बिरद विचार जनहिं अपनावैं ।।
ऐसे कृपालु कृपामय देव के, क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं ।
बड़ भागी, नर-नारि सोई जो, साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं ।।

-: समाप्त :-




हिन्दी साहित्य निकेतन
पुल कुतबरोड सदर बाजार दिल्ली-६